

॥ श्रीस्वामी नारायणावनमो नमः ॥ अथ श्रीमद्भागवतपंचमस्कंधप्रारंभते ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सहजानंद  
 ममसद्गुरु ॥ जनकेमंगलकाज ॥ धर्मज्ञानविरागपूजित ॥ भक्तिकरिमहाराज ॥ १ ॥ तिनकेपदवंदनकरी  
 उरमेणायप्रकास ॥ इनकुंप्रियपंचमऊकी ॥ करुभूमानंदभास ॥ २ ॥ चतुर्थमेप्रियव्रतजो ॥ आत्मनिष्ठा  
 पाई ॥ पुनिगृहआश्रमिभये ॥ मोक्षपाईपूनिताई ॥ ३ ॥ परिक्षीतपूछनशुकताई ॥ प्रियव्रतहरिभक्तकहा  
 ई ॥ आत्मनिष्ठाहोईकेएहा ॥ घरमेंकुंरहेहिकहोतेहा ॥ ४ ॥ घरमेरहनहारकुंआई ॥ बरुविधकर्मवांधहि  
 ताई ॥ आत्मनिष्ठाहितहोयतनुमांनी ॥ देहसबंधिममत्वजानी ॥ ५ ॥ अज्ञानिनरकुंसबएरु ॥ घरमेआ  
 शक्तिघटेतेरुं ॥ प्रियव्रतजेसेकुंघरमाई ॥ आशक्तिनिश्चेजोगपनाई ॥ ६ ॥ तिव्रवैराग्यपूजितविशेसागी ॥ आ  
 त्मनिष्ठानिर्वासनीभागी ॥ गेहमेआशक्तिहेजेहा ॥ देहकुटुंबस्पृहासेतेहा ॥ ७ ॥ ऊतमकिर्त्रिहृष्टकहाया  
 तिनकेचरनकमलकिल्लाय ॥ त्रिविधितापकुंमेटनहारी ॥ तासेचितमेकरुव्रतसभारी ॥ ८ ॥ तसबउभक्तकुं  
 किमतिजोकु ॥ कुटुंबमेस्पृहाऊतनसोकु ॥ दारगेहसुतादिकमांई ॥ प्रियव्रतआशक्तुरहाई ॥ ९ ॥ ताकि

पंचम इकर्य - भूमानंद इयामिकृत.

मजकिछाया ॥ त्रिविधतापकुंभेदनहारी ॥ तासेचितमेमुखजमनारी ॥ ८ ॥ तसवरभक्तु  
किमतिजोउ ॥ कुटुंबमेस्पृहाजुतनसोऊ ॥ हारागेहसुतादिकमाई ॥ प्रियव्रतआशक्त  
हार् ॥ ९ ॥ ताकिअतिअचलमनिजाता ॥ हरिमिजोगसिद्धिजुतसाक्षाता ॥ मोक्षभयोइन  
कोनिजेरु ॥ शुकछेदोसंशोममतेरु ॥ १० ॥ सोरगा ॥ परिक्षिततुमसचकिन ॥ उतमकिर  
तिरुमरुके ॥ चरनशोनाजुतचिन ॥ तिनकेसंगंधरुपरमि ॥ ११ ॥ चोपाई ॥ चितप्रवेश  
करायोजेहा ॥ भक्तप्रियव्रतजेसेतेहा ॥ विघ्नमेगिरेनिवृत्तिमगताई ॥ तदपिउषामकह  
रिकंकहार् ॥ १२ ॥ ओमेपरमहंसकुंवाला ॥ कृष्णकुकिजोकथारगाला ॥ तेहिरुपकल्या  
नकारिजेऊ ॥ भक्तिमगकबुतजनसोऊ ॥ १३ ॥ परमभक्तनारदपदसेवी ॥ आत्मरुपर  
मात्मकेसेवी ॥ तिनकेसरुपजथार्थजेसे ॥ पायेसाक्षातकारहितेसे ॥ १४ ॥ राकाअचितक  
रिकेजेती ॥ सबइंदिकिप्रियातेती ॥ प्रवेशकरायेप्रनुकेमाई ॥ अहोनिशाध्यानकरनकि

तकाल ॥ पुजास्तुतिजशागतही ॥ निकवचसुनिदयाल ॥ २३ ॥ चोपाई ॥ हसिबो लिअज  
प्रियव्रततांई ॥ हेसुततेरेतातकहांई ॥ मनुकहेराज्यकरोतुमजोउ ॥ प्रभुप्रसनतालियुं  
कहिसोक ॥ २४ ॥ सकलपदारथदिनेबहाई ॥ निवृत्तिधर्मभिरहेतुमभाई ॥ जोश्रीकीआ  
ग्पाहेगहा ॥ ममसुरवसेषुनिकहतहितेहा ॥ २५ ॥ सत्यबानिमेकजुतुमताई ॥ जानोतुमह  
रिसुखकिसुनाई ॥ प्रवर्त्तिमगमेंजोरेमो ॥ दोषहृगसेमतजोनासोई ॥ २६ ॥ शिवमनुनारदह  
मजुतजेता ॥ आगपापालतपर्वशतेता ॥ प्रभुनेकृतथासोहेजोऊ ॥ तिनकुंदेहधारीजि  
वसोक ॥ २७ ॥ तपविद्याजोगश्रेष्ठयेसे ॥ बुद्धिबलधनधर्मकरेसे ॥ बलवंतकुंकुआशरि  
जोऊ ॥ निजपौरुषप्रयत्नेकोऊ ॥ २८ ॥ मिथ्याकरनसमर्थकोनाई ॥ जुंहरिधारेहोतहिता  
ई ॥ राज्मकरावेंगिप्रभुतोई ॥ मिथ्यानहिहोनेकिसोई ॥ २९ ॥ जन्ममरनअरुकर्मकिकागा  
शोकमोहमुक्तिलियेराजा ॥ सुखदुखलियेसबजिवकुंदिना ॥ हेरकुंधारतहिहोशदिना

अहंममविनतेसे ॥ कहोगेतुममुक्तकुंजोई ॥ भोगवासनासुजन्मनहोई ॥ ३८ ॥ तबसेक  
कुमुक्तजननेरु ॥ कर्मवासनारखेनतेरु ॥ जासेओरदेहपुनिपावे ॥ सोईवासनाउरब  
हावे ॥ ३९ ॥ कहोगेतुमघरमिभोगभोगी ॥ अहंममताविनरहेकुजोगी ॥ घरतजिवनरे  
नोजोम्यतेकु ॥ प्रियव्रतककुमेउतरारु ॥ ४० ॥ विनइंदिजितवनभयपावे ॥ षट्शत्रुसो  
संगलेजावे ॥ आत्मपरमात्मज्ञानवाना ॥ जितइंदिआत्मारामसुजाना ॥ ४१ ॥ असनर  
कुं गृहआश्रमजोऊ ॥ बंधनकलुंनकरतहिसोऊ ॥ षटकुंजितनइंछेजबही ॥ घरमेर  
हिकेप्रथमतबही ॥ ४२ ॥ विभोगसंकोचिडारे ॥ जलकुंसेक्षिणशत्रुहिसारे ॥ तबहिवि  
वेकिघरवनमाई ॥ निजइच्छासेरहोसदाई ॥ ४३ ॥ नृपबज्जुजितिगटमाई ॥ निरभेरहेजु  
बाहिरजाई ॥ घररुपिगटमेरहिकेजेहा ॥ षट्आरिजितहितुलुनरतेहा ॥ ४४ ॥ प्रियव्र  
तहरिपदरुपगटतार ॥ आशरिषटरिपुदिनेहवाई ॥ प्रभुदिनराज्यभोगतवजेता ॥ प्रथ



ईच्छाङ्गसेपाया ॥ राज्ञ्यकर्मअधिकारहिगाया ॥ सबजगबंधनकानाशकजेरू ॥ बडमहि  
माज्जुतप्रभुपदतेरू ॥ ५२ ॥ तिनकोध्याननिरंतरधारी ॥ कामादिमलदिनेउजारी ॥ सुध  
अंतःकरणप्रियवताई ॥ अज्ञप्रग्यापालतमुदपारै ॥ ५३ ॥ तिनकोमानवधारतराहा ॥  
भूतलकुंपालतनृपतेहा ॥ प्रजापतिविश्वकर्मकैरी ॥ कंग्याबर्हिष्मतिपरनेरी ॥ ५४ ॥  
दशसुतकुंउपजायेतामै ॥ उर्जस्वतिराकफताजामै ॥ निजतुल्यफतसबशिलगुणावा  
ना ॥ विर्यकर्मरुपवंतसजाना ॥ ५५ ॥ तिनकेनामअग्निधराका ॥ रधमजिरूयज्ञवाङ्क  
जेका ॥ महाविरअगोरहिरणपरेता ॥ घृतपृष्टसवनमेधातिथिता ॥ ५६ ॥ वितिहोत्रकविदश  
मेजानो ॥ अग्निकेअसनामपैश्वानो ॥ दशामेसुतिनसुतदेजोऊ ॥ नैष्ठिकब्रह्मचारिन  
येसोऊ ॥ ५७ ॥ महाविरकविसवनजोतीना ॥ बालङ्गसेअरंभिप्रविना ॥ आत्मविद्यामे  
परिचर्यकिना ॥ परमहंसहोगयेसुचीना ॥ ५८ ॥ जिवसमुदकेआधारअनुपा ॥ सुसुक्षुऊ

देखावे ॥ नजासेहमेहेरेथोरा ॥ हासिमस्करिवचमेवहोरा ॥ ६६ ॥ इत्यादिकसेनृपकोजो  
क ॥ विवेकनात्रापायेज्जुसोऊ ॥ विशोआशक्तिसेपुनिजेसे ॥ आत्मस्वरूपविसरेज्जुतेसे  
॥ ६७ ॥ असविधराजकरतनृपजबही ॥ मेरुकुंप्रकंमाकरेतबही ॥ लोकालोकपर्यंतभुजे  
ती ॥ प्रकाशिदेवतरवितेती ॥ ६८ ॥ अर्धमंडलप्रकाशातजबही ॥ अर्थआच्छादनकरतत  
बही ॥ रविप्रकाशाबखानतनाई ॥ दीवसकरूंमेरजनिताई ॥ ६९ ॥ रविरथवेगसमवेग  
जाको ॥ तेजोमयज्जेरविसमताको ॥ असविधसामर्थजोनृपकेरी ॥ हरीउपासनऊ  
सेबढेरी ॥ ७० ॥ सबसेअधिकप्रतापहिजाई ॥ सप्तसिंधुरथपदसेखनाई ॥ सोचिजासं  
सप्तद्विपाई ॥ ताकेनामकऊतूमताई ॥ जंबुज्जलात्प्रलिकुशा ॥ कौंचशाकपुष्कररि  
पुशा ॥ ७१ ॥ पेलेंपेलेंद्विपसेजेहा ॥ उतरउतरकेद्विगुणातेहा ॥ असविधसिंधुबाहिरजे  
हा ॥ चऊओरद्विपविटायतेहा ॥ ७२ ॥ मोरठा ॥ झारोदर्क्षुरसोद ॥ सुरोदघृतोदक्षिरो

आपकिनिहाकरही ॥ पुर्णहोइविषयपरहरही ॥ पुनिस्तकुंभूवांठिदीनां ॥ नारिजुत  
तजिगज्यप्रवीना ॥ ८२ ॥ शबतुल्यजानितजेउजबही ॥ निजउरवैराग्यपायेतबही ॥ हरि  
विहाररुदामेधारी ॥ प्रभुक्रुपासैंविवेकबहारी ॥ ८३ ॥ प्रियव्रतअतिसमर्थहोइ ॥ नार  
दकेउपदेशसेसोइ ॥ निवस्तीकोमगथेजेहा ॥ पुनिप्रियव्रतपायेतेहा ॥ ८४ ॥ प्रियव्रत  
केमहिमाजुतजोऊ ॥ कऊगाथासुनुपरिक्षितसोऊ ॥ प्रियव्रतकिनैकर्महिजेसे ॥ प्र  
भुविनकोउकरेनतेसे ॥ ८५ ॥ निजरथसैंअंधकारमिटार्इ ॥ सातसमुद्रकिनेउताइ ॥ सप्तधि  
पसेकिनेजेहा ॥ बुव्यवस्थाकरतहितेहा ॥ ८६ ॥ सबप्रानिऊकेसुखकाजा ॥ सप्तधियके  
भागहिराजा ॥ नक्षिपर्वतवनऊसेजोऊ ॥ सिमाडाकरदिनेउसोऊ ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ स्वर्गभु  
प्रियातालके ॥ वैभवजितनेहोइ ॥ योगअंशुयकुंपुनी ॥ नरकजुंमानिसोइ ॥ ८८ ॥ इति  
श्रीमद्भागवत ॥ पंचमस्कंधमेऊं ॥ प्रियव्रतभुवनजितेजो ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ ८९ ॥ ॥

ई॥ अग्निभ्रकुंजो गभंकाजा ॥ अजपरवा इति गन्नाइ राजा ॥ ७ ॥ ससलोकसेवनमेच्छा  
ई॥ अमृतनमरिज्युंवनपार ॥ बक्रविधवृक्षकिजलिसमूहा ॥ कनकवेलिलपटेजुगुहा  
८ ॥ तापरपक्षिमोरादिजोरा ॥ षडजस्वरबोलतसुमोरा ॥ तामेजागेउजलकुकुठ ॥  
कारंउवकलहंसप्रखूटा ॥ ९ ॥ विचित्रशाब्दसेजलजेहा ॥ निरमलशाब्दायमानतेहा ॥  
तामेफूलेबक्रविधकंजा ॥ तेहिंसमुहजुतवनमनरंजा ॥ १० ॥ सुंदरगतिसेपगजोधरना  
तिनकरविलासशास्त्रस्वागाना ॥ सुंदरकांकरकेस्वरसूनी ॥ समाधिसेनृपनिकसे  
पूनी ॥ ११ ॥ कमलकलिसमंग्रंखियांदोई ॥ खोलिदेखेअश्वरासोई ॥ अवकाशापायेस  
रथकामा ॥ ताकेवशाभरनृपचक्रजामा ॥ १२ ॥ निजदिगाफिरेभमरिज्युंहोई ॥ सुमनकोगं  
धलेवतसोई ॥ देवनरकेमननेनांजेऊ ॥ ताकुंअनंददेवततेऊ ॥ १३ ॥ विहारक्रियाविनय  
जाके ॥ निकेस्वरअरुवचहेताके ॥ नेत्रादिअंगकुंसेगहा ॥ नरकुंकामउपजाइतेहा ॥



नाकरुंतिहारी ॥ तवप्रसप्राक्रमहिजोभारी ॥ जडबुधिवंतहौमेजेरु ॥ मोरक्षेमलिये  
होतवतेरु ॥ २२ ॥ त्रियातनुसंगंधसेलोभार् ॥ मधुकरपिछेफिरेलखिताई ॥ कहिहेसम  
र्थतवचक्रश्रीरा ॥ शामवेदगावेशिष्यतोर ॥ २३ ॥ तोरशिखाफुलकरेसदाई ॥ चक्रश्रीर  
बिनतहेसवधार् ॥ कृषिगणावेदशाखाजेसे ॥ रहस्पजुतभणोसुंतेसे ॥ २४ ॥ जांकरकेस्वरसु  
निबोलेऊ ॥ हेब्रह्मनतवचरनमेजेऊ ॥ पिंजरमेतेतरकिबानी ॥ सुनेहमबोलनहारनजा  
नी ॥ २५ ॥ तिनुनेपितपटपैरेजेरु ॥ नितंबकांतिकल्पिकेतेरु ॥ कहिहेतपसिनितंबतेरा ॥  
कदंबफुलसेत्रोभहिदेरा ॥ २६ ॥ कटिमेखजालखिकहेगाहा ॥ हेमुनिकदंबशोभाजेहा ॥ अ  
ग्नितेजमंडलजपुराजे ॥ तनुलपटिपटसुह्रमछाजे ॥ २७ ॥ लखिबोलेहेतपसिहोई ॥ वरु  
कहांगयेकहोमोई ॥ स्तनलखिकहिहेब्रह्मणदोउ ॥ मंदरशिंगमेकपाहेकोऊ ॥ २८ ॥ कडु  
मनोहरहेहमजाने ॥ मध्येरुपतुमहोतौमाने ॥ डखसेशिंगउठातहोजवही ॥ ममहगचो

केतुमपार्श्वे ॥ मोरसंगतकरोतुमन्त्रार्श्वे ॥ ३७ ॥ ब्रह्माममपरप्रसनहोर्श्वे ॥ तुमकुंमिलाईदि  
 नेमोर्श्वे ॥ अतिवलभमेतजूनतोर्श्वे ॥ मनहमन्त्राशक्तनयेसोर्श्वे ॥ ३८ ॥ तुमकुंसागिडस  
 जावे ॥ तवन्नाधिनहोर्श्वमरहावे ॥ जोस्थलजानइच्छिततेरा ॥ सोस्थलमाकुंलेवल  
 भेरा ॥ ३९ ॥ तिहारिसखियुहेजेती ॥ मोकुंअनुचारिरहोतेती ॥ शुक्रकरेत्रियाप्रसनकर  
 जोऊ ॥ चतुरदेवसमबुंधिवंतसोउ ॥ ४० ॥ आग्निध्रयास्पनरकेमाई ॥ चतुरपणाजुतवा  
 निगार्श्वे ॥ जासेपुर्वचितिकुंराहा ॥ अतिप्रसनकरदारेतेहा ॥ ४१ ॥ सोरवा ॥ सुर्युथपति  
 केजेऊ ॥ बुधिशिलरुपवयशोभादि ॥ उदारपणुपुनितेऊ ॥ देखिनृपमिन्त्राशक्तनइ  
 ४२ ॥ चौपार्श्वे ॥ जंबुधिपपतिसंगराहा ॥ सहस्रहजारवर्षलुतेहा ॥ भुमिरुपस्वर्गभोग  
 जेता ॥ पुर्वचीतीजोगतहितेता ॥ ४३ ॥ आग्निध्रिअप्सरामाई ॥ नवपुत्रकुंदिनेउपजा  
 ई ॥ नाभिकिंपुरुषहरिवर्षा ॥ ईलाहतरम्यककुरुसर्षा ॥ ४४ ॥ हिरण्यमयनइशुजोऊ ॥

मित्रिष्यभूमानंदमुनिद्वतभाषायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ ॥२॥ ॥दीहा॥ परममंग  
लरूपनामिकि ॥ चरित्रतिमरेकिन ॥ जाकेयज्ञमेरुप्रभं पुत्रभयेउप्रविन ॥ १ ॥ शुककहि  
सुत्प्रच्छाङ्गसे ॥ नाभिराजाजोरु ॥ फलविनमेरुदेविजून ॥ निश्चलमनकरिसोक ॥ २ ॥ चो  
पाई ॥ यज्ञपुरुषकुंयज्ञतहिजवही ॥ अधाविसुधभावसेतवही ॥ मखमेप्राङ्गतिदेव  
तयस्ही ॥ इयदेवाकालमंत्रतस्ही ॥ ३ ॥ कृत्तिकदक्षिणाप्ररुविधाना ॥ सप्तउपायसप  
तविधनाना ॥ इतनेसेंडुः प्रापहेजदपी ॥ निजभक्तपदयाकरितदपी ॥ ४ ॥ शोभामानक  
रचरणजाके ॥ स्वतंत्रमुर्तिप्रगटकिनताके ॥ निजभक्तकेवांछितजेता ॥ मनोरथपुणक  
रनेतेता ॥ ५ ॥ जनईच्छासेरुदयतणाई ॥ भक्तकुंकरवदाताकहाई ॥ निजजनकेमनने  
त्रकुंजोक ॥ आनंदप्रदकरचरणसोक ॥ ६ ॥ अतिसुंदरहरिचक्रुजधारी ॥ पुरुषोत्तम  
तेजोमयनारी ॥ पितदिगगलपटधरणरु ॥ श्रीवल्लुचिह्नवक्षस्थलतेऊ ॥ ७ ॥ शंखचक्रक

नामरूपआकारा ॥ तिनसेकीउरकरनेदारा ॥ १५ ॥ तुमतो प्रकृतिपुरुषगुणकेरा ॥ क  
र्ताहोइनकुंनहिनेरा ॥ तवरूपनामआकृतिजेरू ॥ दिव्यरुनिसनिरंतरतेरू ॥ १६ ॥ तोरस  
रूपकोयथार्थजेरा ॥ निरुपणकरनेसमर्थगरा ॥ प्रकृतियुगावशाजिवहेजोऊ ॥ कैसेस  
मर्थहोवेसोऊ ॥ १७ ॥ प्राकृतपुरुषहेजोकोऊ ॥ तवगुणसमोहमेसुसोऊ ॥ एकगुणकुंके  
नोहिजेरा ॥ अधिककेवचनजोगपनतेरा ॥ १८ ॥ सबजनकेतुमहोडुखहता ॥ अतिसुभरू  
पश्रेष्टगुणतवनजा ॥ प्रभुतवनक्तनेस्नेहसेकिन ॥ गरगरअक्षरस्तुतिप्रविना ॥ १९ ॥ ज  
लसुधपद्मवतुलसिद्धवा ॥ अंकुरपुजासंपत्तिपूर्वा ॥ तासेनिश्चैसंतोषपावा ॥ यहविन  
बहुविधयागबनावा ॥ २० ॥ तासेतवइच्छितअर्थनार् ॥ भक्तकोफलजल्लेतसुहाई  
पवादिसेसंतोषपाई ॥ अनक्तदिनबहुइच्छतनाई ॥ २१ ॥ ब्रह्मांडमिस्करवजिततुरहाई ॥ गो  
लोकमेपुनिसुखहेजाई ॥ सोसबतोरविषेकरवरहही ॥ तुमसेसाक्षातहीतयुकहही ॥



लमलरासेब्रह्मवादी ॥ ३० ॥ तवतुलदीघरहितस्रभावा ॥ आत्मारामहिमुनिकहावा ॥ तिन  
केपरममंगलरुपजोऊ ॥ तवगुरागणाकेकथनसोऊ ॥ ३१ ॥ तवदर्शनसाक्षातनदिपावे  
असविधइल्लभदर्शकहावे ॥ तवदर्शनकरिकेहमजेहा ॥ कर्त्तार्यभयेहेसबतेहा ॥ ३२ ॥  
तदपिराकवरमांगुंस्वामी ॥ सोदेऊमोयअंतरजामी ॥ चलतठेशालगिलउथदुजबही  
उरुछेंकऊसेगिरजावेतबही ॥ ३३ ॥ कष्टथानमिलेकीउआई ॥ बगासुआदिक्रियाकहा  
ई ॥ तावरुमरणदशाजबआई ॥ तबतवस्मरणकरनेताई ॥ ३४ ॥ भक्तवाछुत्मादिगुराजे  
हा ॥ तासेनांमतिहागकेहा ॥ हरेकृष्णनारायणजेहा ॥ भक्तवल्लदामोदरेतेहा ॥ ३५ ॥  
पतितपावनअथमउधार ॥ नामउचारोमुखहमारा ॥ सकलजिवकेअघइखजेता ॥  
नामतिहारोमेटेतेता ॥ ३६ ॥ पुनिराकइल्लतनामिजेरु ॥ तुमसरखिप्रजाप्रभुतेरु ॥ सबनि  
धिकेहोतुमस्वामी ॥ स्वर्गमोक्षपतितोयनमामी ॥ ३७ ॥ तोरउपासनकरतहिराजा ॥ प्रजा

दनकीनां ॥ ऋषिदिगबोलेप्रभुप्रविना ॥ ४५ ॥ सप्तवानिहेदिजोतिहारो ॥ इर्जनवरमांगे  
दिगगारी ॥ हमजेसोसुतनाभिकुंहोउ ॥ अतिसेइर्जनदेवरसोऊ ॥ ४६ ॥ हमजेसोहमएक  
कहाई ॥ ओरनाहियहकारागाताई ॥ द्विजवचमिथ्याहोहिनकवही ॥ द्विजकुलमेरोसु  
खहेसबही ॥ ४७ ॥ हमजेसोओरकोउनदेखी ॥ आग्नीधसुतनाभिकुंलेखी ॥ हमरन  
कोसुतहोउगिआई ॥ अंश कलासबसंगेलाई ॥ ४८ ॥ शुक्रकहेअसविधहरिवचमुनी  
मेरुदेविनिजपतिजुतपुनी ॥ युंनभिकुंकहिवासुदेवा ॥ अंतर्धानिभयेततरवेवा ॥ ४  
९ ॥ दोहा ॥ बरुऋषिनेयज्ञविषे ॥ प्रसनकियेप्रभुजोउ ॥ परमहंसकेधर्मजो ॥ हेखावनइ  
छोउ ॥ ५० ॥ प्रियेकरननाभीऊको ॥ मेरुदेविकेमांई ॥ शुक्रमुर्तिप्रगटभये ॥ शुक्रनेकहि  
वृपताइ ॥ ५१ ॥ परमहंसदीगंबर ॥ तपसिज्ञानिहोरी ॥ नैशिकब्रह्मचरिहे ॥ तिनलियुजने  
सोई ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ ऋषभदेवप्रगटभये ॥ भूमानंदकहेऊ ॥

जनाभमाई ॥ निजयोगमायासेवर्षाई ॥ ७ ॥ नाभिनिजमनमेच्छतजेसो ॥ सुंदरसुतपायेउ  
 तेसो ॥ अतिप्रानंदभयोउरमाई ॥ तिनकेभौरमेविकल्पताई ॥ ८ ॥ निजइच्छामेकृषभजोक  
 नरलोकतुल्यधर्मरखेसोक ॥ पुराणापुरुषोतमहेएहा ॥ नाभिसुतमानिनिजतेहा ॥ ९ ॥ गद  
 गदप्रक्षरवचउचारी ॥ अज्ञातस्नेह उरआनिभारि ॥ हेतातहेसुत कहिगहू ॥ परमसुखकुं  
 पावततेहू ॥ १० ॥ मोरपुत्रहेयुंमनमाई ॥ मायासेअसमतिरहाई ॥ हेजापुरवासिजनकेजे  
 क ॥ गमतुंनानिमानततेहू ॥ ११ ॥ पुरजनप्रधानपर्यंतकेरा ॥ निजसुतमेहेतदेखिदेरा ॥ ध  
 ममर्यादारक्षणाकाजा ॥ किनेअभिज्ञोककृषभराजा ॥ १२ ॥ सोब्राह्मणकेगोदबेवा ॥ मेरु  
 हेविजुतनाभिजाई ॥ बडिअममेतपराहू ॥ तिवसुखप्रदकिनेतेहू ॥ १३ ॥ पुनिसमाधियोग  
 हिधारो ॥ नरनारायणउपासनकारी ॥ कालकरवासुदेवकीजोउ ॥ ब्रह्मभावकुंपावतसो  
 क ॥ १४ ॥ शुककहेचरित्रनाभिकेरा ॥ बडेकृषिगावतहेदेरा ॥ नाभिनेकियेकर्महितारि ॥ पिछे

तत्तेजः ॥ २३ ॥ नवयोगेश्वरकोनिकजोक्त ॥ चरित्रणकादशामेसोक्त ॥ हरिमहिमानुपशामया  
मार्ग ॥ वसुदेवनारदवादकहाई ॥ २४ ॥ तामेछोटजयतिकेरा ॥ एकाशिसुतरूपनदेवेरा ॥ ता  
तआगपाकरविनयवाना ॥ वेदस्मृतिसुभनेसूजाना ॥ २५ ॥ यज्ञकरनकोसुभावजाई ॥ कर्म  
सेअतिसुधविप्रकहाई ॥ कृष्णभदेवसतंत्ररहही ॥ नित्यनिवृत्तिपायेतबही ॥ अधर्मरूपअ  
नर्थकिजेहा ॥ परंपराकावेजोतेहा ॥ २६ ॥ सुधअनंदसोअनुभवजाई ॥ सुखदुखमेनामशा  
तरहाई ॥ सबमेमित्रभावहेजाकूं ॥ ह्यारुईश्वरपागुहेताकं ॥ २७ ॥ कर्मकरतअनिश्वरन्या  
ई ॥ काहमेधर्मनाशजोपाई ॥ तिनकुंआचराकरिकेराह ॥ मनुष्यकुंशिखावततेह ॥ २८ ॥  
धर्मअर्थजसकामप्रजाई ॥ मोक्षकुंकोजानतनाई ॥ सबजनकुंशिखावनकाजा ॥ एह  
अमिहोतहिराजा ॥ २९ ॥ गृहस्थनिममेरहिममन्याई ॥ धर्मादिकआचरकुंजाई ॥ श्रेष्ठपुरुष  
आचरहिजेसे ॥ लोकआचरहिपिछेतेसे ॥ ३० ॥ सकलधर्मवेदरस्यमाई ॥ कृष्णभयथार्थजान



कहेऊ ॥३५॥ ॥ इति श्रीमहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतभाषायांचतुर्थोऽध्या  
 यः ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ मोक्षधर्मउपदेशसे ॥ सुतकुंशिक्षादिन ॥ परमहंससुंदखसहे ॥ पं  
 चमेमेसोकिन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहेरूपप्रदेवसुतताइ ॥ बोलतहेसुतनरलोकमा  
 ई ॥ तनुधरजिवकुंमनुषतनुआइ ॥ अतिइखदाइविषयलियुनाई ॥ विषयभोगभू  
 उकुंहोई ॥ विष्णखावनहारकुंसोई ॥ मनुष्यतनुदिव्यतपलियुआई ॥ जिवसेअंतःकर्ण  
 सुधजाई ॥ अंतःकर्णसुधहोवेजबही ॥ ब्रह्मकोसरखवहुपावतबही ॥ ३ ॥ महसुरुषकि  
 सेवाजेहा ॥ बडसंतमुक्तिदाकहितेहा ॥ विद्यासंगिकोसंगहिजोक ॥ संसृतिद्वारकहिसो  
 क ॥ ४ ॥ सरवडखमेसमचितहेजाई ॥ क्रोधरहितअतिशांतसदाई ॥ सबप्राणिकेसूरुद  
 जेरू ॥ निकआचरणोजुतबडतेरू ॥ ५ ॥ हमइश्वरमेसरुदपणुजोक ॥ परमपुरुषार्थरन  
 कुंसोक ॥ देहपोषकविषयकिगाथा ॥ जिवमेहेअसोसबसाथा ॥ ६ ॥ सुतदारामितज

वधानजनहिजबतार्इंइंइकिचेष्णमिष्णाजेरू॥विवेकिहोइनदेखततेरू॥१४॥तबलुं  
 स्वरुपस्मृतिदिनहोई॥तनुमेआत्ममतिवंतसोईं॥त्रियानरसबंधिसुखसुखमजामि  
 सोअरपाइपावेइस्यतामी॥१५॥**सोरठा**॥त्रियापुरुषकोजोउ॥तनुमनकरकेपरस्पर॥  
 सबंधहेजोसोउ॥दोकुंरुदयग्रंथिहे॥१६॥**स्नेह**कियंथिमाईं॥नरनारिगुंथाइरहे॥**कुं**हे  
 त्रसुतभाईं॥कुंदुंबधनमेअहंमम॥१७॥**घोपाईं**॥असविधमोहबडोहिजेरू॥मिथुनि  
 भावसेहोहितेरू॥कर्मकरिकेहटबंधाईं॥मनरुपरुदयग्रंथिकहाइ॥१८॥महत्सुरुष  
 किसेवासेरु॥मिथलहोइजावेजबतेरू॥तबजनमिथुनिभाववहावे॥रुदयग्रंथिसे  
 मित्रतिपावे॥१९॥पुनिअहंममत्वकुंत्पागी॥पातपरमपदमुक्तकरागी॥अहंमत्व  
 त्यागनकेरू॥साधनपवित्राहेककतेरू॥२०॥अतिशुधगुरुहमहेताकी॥भक्तीकरि  
 अनुवृतिरखेयाकी॥रेनीतएमारहितजोक॥सुखदुखमानअपमासहोक॥२१॥जिव

गृह

न

शेहनकरनोज्ञा २५ ॥ असविधमेरिनावना ॥ तामिचतुर्पणुजेह ॥ असेअबुनवयुक्तजो  
ज्ञानकहावेतेहु २६ ॥ अष्टांगयोगपविशामो ॥ साधनकरिनरजोउ ॥ धिरजउद्यमविवेक  
जुत ॥ अहंममत्वसोक २७ ॥ उपाधिसबकुंछोरके ॥ नरहोइसावधान ॥ बडविधकर्मनिवा  
सरूप ॥ अविद्यारचितज्ञान २८ ॥ अहंममत्वरुदेरहे ॥ कर्मग्रंथिवंधिन ॥ पुर्वकहेउपा  
यसे ॥ खोलिहेतप्रविन २९ ॥ चोपाई ॥ पुनिसाधनको आग्रहसागि ॥ सदजमजनस्मरण  
करेरागि ॥ ममलोकपावनइच्छाजाई मोरअनुग्रहकेवलचार ३० ॥ सोइतातनिजसुतकी  
ताई ॥ असविधशिक्षाकरेहितलाई ॥ गुरुशिष्यकुंघजाकुंराजा ॥ क्रोधविनबुजावनका  
जा ३१ ॥ पुर्वेकिनकल्याणउपाया ॥ ताकुंनहिजानतहेराया ॥ तिनमेकल्याणमानिजेहा  
केवलकाम्पकर्ममेतेहा ॥ मुदयेसुतशिष्यप्रजाई ॥ कार्मकर्ममेपेरेनताई ३२ ॥ निजबु  
धिसेकल्याणजोक ॥ जानतनहिअसलोकहिसोक ॥ अतिइच्छाविषयभोगकेरी ॥ धनप्रा

ई ४४ ॥ मोरता ॥ तुमसे प्रतिबडवीर ॥ भरतकुंलेशविनाबुधि ॥ रविकेभजोधरिधीर ॥  
सगाभ्राततिहारेहे ॥ ४५ ॥ तुमकहोगितवसूत ॥ तुमकुंभजु ॥ प्रजापालु ॥ कद्रुमेसुनी  
बुधिजुत ॥ भरतहिअनुसरदोउभई ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ विप्रसेववजोग्यआशयएहू ॥ ज  
नानश्रेष्ठपणुकहेतेहू ॥ जउचैतनजिवहुमेजेता ॥ उगिनिकसेस्यावरतेता ॥ ४७ ॥ वेली  
आदीउतमअतिएहू ॥ तिनसेभिजंगमहेजेहू ॥ अतिशोउतमहेसबतेहू ॥ तिनमेज्ञाव  
जुतपशुकहेहू ॥ ४८ ॥ तिनसेमनुष्यश्रेष्ठकहाई ॥ तामेभुतप्रेतादिकाई ॥ तिनसेसिधना  
मजोदेवा ॥ तामेकिंनरश्रेष्ठमेवा ॥ ४९ ॥ इनसेअस्तरश्रेष्ठकहाई ॥ देवताश्रेष्ठअस्तरसेभा  
ई ॥ देवसेइंइउतमकहावे ॥ अजसुतदक्षादिकसुहावे ॥ ५० ॥ तिनमेब्रह्माकेसुतशिवा  
शिवसेबाह्माश्रेष्ठकहेवा ॥ ब्रह्मामेपरहमेकहाई ॥ मरेपुजनजोग्यदेवन्याई ॥ ५१ ॥ बाह्मण  
हेसोश्रेष्ठकहाई ॥ बाह्मणतुज्यओरकौउनार ॥ बाह्मणसेजोश्रेष्ठकहाये ॥ सोतोमेरिन



ॐ साक्षात्कारतु मज्जान् ॐ मम आराधनते ॐ ६० ॥ श्रीदिविनश्रीरउपायसु ॥ मनुष्यदे  
जोकीउ ॥ महामोहकालपाससु ॥ छुट्ठाके नहि सोऊ ॥ ६१ ॥ **वीपाई** ॥ शुकजिकहेबडमहि  
माजाको ॥ सबकेपरमं सुदहेताको ॥ कृषभदेवनेशिक्षादीना ॥ सुंजानतनिजपुत्रप्रवि  
ना ॥ इसविधवरततहेसवतेहा ॥ लोकशिक्षालियेकिनिहा ॥ ६२ ॥ जिवमेंप्रतिलोमवरता  
ई ॥ इंद्रिशोभविनस्वभावाई ॥ प्रवृत्तिरूपकर्मसबत्यागी ॥ जैसेमहामुनिवरसुरागी ॥ ६३ ॥ ति  
नकापरमहंसधर्मजोउ ॥ भक्तिज्ञानवैग्यानुतसोऊ ॥ शिखवेंगेकृषभदेवराहा ॥ सतसु  
तमिबडभरतकुंतेहा ॥ ६४ ॥ हरिनकनकेआपितजानी ॥ रूमिपालनलियेसमृथमानी ॥  
राज्यअभिशोककरकेताई ॥ निजतनुविनसबतजिघरमाई ॥ ६५ ॥ पुनतन्याइदिगंबरहोई  
छुंटेहेशिरपरकेशामोई ॥ आरोग्याकिनिजआत्माई ॥ अग्निहोत्रादिकजोताई ॥ ६६ ॥ ब्र  
ह्मावर्तनिजदेशमेंहू ॥ परमहंसहोइचजदिनेहू ॥ अवधुतवेशामुनिबतधारी ॥ जडअंधमु

ई॥ अतिकोमलकरचरनछाति॥ विशालबाहुखंभादौख्याति॥ ७५॥ मूरवङ्गादिसव  
अप्रवयवताकी॥ अतिफंदररचनादेजाकी॥ फंदरमुर्तिहसतमुखसोहे॥ नवकंजकिपां  
खड्गिजुंदोहे॥ ७६॥ लंबेशितलतापकेहारी॥ लालविशालहृगकिकिकारी॥ फंदरतुल्य  
कपोलरुकाना॥ कंठनामिकाफंदरवाना॥ ७७॥ अतिगुटहसनिमुखमेजाकी॥ कामउ  
पजावेविलासताकी॥ पुरकिचियाकेमनमार्ई॥ असविधरुषनकिमुर्तिसुहाई॥ ७८॥  
तदपिमुखदिगलटकेकेरा॥ बंकेपिनजटाबंधवेशा॥ अनाइजुतमलिननितअंग  
ग्रहपहितज्युदेखातनंगा॥ ७९॥ कृपनदेवअसलोककुंजबही॥ योगमगकोअरिरे  
विसबही॥ तिनकुंमिहाकरनिजेहा॥ निहितहेसुंदेखततेहा॥ ८०॥ अजगरवतकेल  
छनारु॥ एकगोरप्रारथभोगेकुं॥ तिनकुंअनुमरीसुतेजबही॥ तिमेलपिवेखावेन  
बही॥ ८१॥ तेहिथलसुतअरुजाडुकरही॥ लोटतअंगलिपायेतरही॥ तिनकिविरके

स्वामिशिष्यभूमानंदमुनिहृतभाषायांपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ निष्प्रति  
मानिक्रमभतनू ॥ जारतअग्निआई ॥ हेवेतदपिनदेखत ॥ षटकेअध्यामार्श ॥ चौपा  
ई ॥ परिक्षितपुल्लतशुकजितार्श ॥ अथात्मयोगसेदिप्राई ॥ असविधज्ञानकुसेसब  
जेरू ॥ जारिदिनेकर्मविजतेरू ॥ २ ॥ आत्मारंमबुरजोगिजोऊ ॥ सहजपायेअेश्वर्यसो  
ऊ ॥ इनकुंकेआदेनकुंएहा ॥ निश्वेयोगपनहोतहितेहा ॥ ३ ॥ यहकारनरुषनदेवजेरू ॥  
अेश्वर्यकुंएहाकिननतेरू ॥ शुकजिघरमरुनिकेएहा ॥ परिक्षितकुंकहिंसमकि  
नेहा ॥ ४ ॥ बुद्धिमानविवेकीजेता ॥ चंचलमनकुंविश्वासतेता ॥ सम्पकघकारकरत-  
नार्श ॥ निर्दयपाराधिअुकहाई ॥ ५ ॥ पकरेमृगलाऊकोजेसे ॥ सम्पकविश्वासकरेनते  
से ॥ चंचलमनऊकोविश्वासा ॥ कबऊनकरनोरखिस्वरुआसा ॥ ६ ॥ बऊकालपयं  
ततपकीना ॥ समर्थशिवसौभरिप्रविना ॥ मनविश्वासेरुविगयेऊ ॥ विश्वासियोगि

तनुअभिमानकिअनुवृत्तिजोक॥ बाधपाईगयेहेसोक॥ १५॥ तनुमानविनरूपनदेव  
एक॥ निर्विकल्पसमाधिकिजेरू॥ सिधिलियेकिनेमाधनकेरी॥ वासनाऊसेरहिगये  
री॥ तनुअभिमानकिअभ्यासजोउ॥ तिनकरनुमिपरफिरतसोक॥ १६॥ कोंकवेंककुंड  
कजोदेखा॥ दक्षिणाकर्णाटकनामेखा॥ युद्धयाकरिपायेदेरू॥ पूर्वजिमनअभ्यासमे  
रू॥ १७॥ मुखमेपथरकोलियोकिना॥ उर्मतजुशिरकेशछोडदिना॥ नग्नहोईकुटकाच  
लतारी॥ विचरतिनकेठिगवनमारी॥ १८॥ वायुवेगऊनेकंपाया॥ बांसपरस्परअतिघ  
राया॥ तिनसेअयेदावानलनारी॥ चऊआरदेवतवनकुंजारी॥ १९॥ रूषदेवकोदेह  
जरेऊ॥ असविधआचरणकिनेजेरू॥ कोंकवेंककुटककोराजा॥ अर्हनामकहेज  
नसाजा॥ २०॥ देशवासिजनसेस्फुनिररू॥ सोआचरणकुंशिखततेरू॥ निर्भयनिजध  
र्ममगत्यागी॥ मंदमतिअर्हनअज्ञागी॥ २१॥ होहा॥ कलियुगमेअधर्मअती॥ वृधिपा



पकेमंगलकृकेकाजा ॥ विश्वासरखद्विदुष्टसमाजा ॥ ३० ॥ तुमकहोगिरूपनकोजेदा  
चरितदेखिपाषंडनयेहा ॥ बडुजिवकोबुरोमयोजासे ॥ अनर्थलियुअवतारहितासे ॥  
३१ ॥ सुनुपरिक्षितअवताराहा ॥ रजोगुणिकुंशिखावनतेहा ॥ अहंममत्वत्यागेजबदी  
इतकोकल्मानहोवेतवती ॥ ३२ ॥ **सौरठा** ॥ मोक्षमगकेअबुरूप ॥ बडुपुरुषमहिमाकरही  
अतिआश्चर्यअनूप ॥ सप्तसमुद्रजुतभूके ॥ ३३ ॥ **चोपाई** ॥ सप्तदिपछेतालिखंडा ॥ भर  
तरवंडमेपुसप्रचंडा ॥ तामेरहनहारजनजेता ॥ हरिअवतारजुतचरित्रतेता ॥ कल्मान  
कारिगावेजोक ॥ याकारनउतमखंडसोक ॥ ३४ ॥ प्रियवतकोवंशादिजेरू ॥ निजयशसे  
अतिशुधहेतेरू ॥ जामेपुरानपुरुषथेजोउ ॥ रूपनअवतारधारतसोक ॥ ३५ ॥ आच  
रतआदिपुरुषररू ॥ मुक्तिदपरमहंसधर्मेरू ॥ कुनहेअसोडुसरोजोगी ॥ रूपभदेवकि  
द्विज्ञान्प्रोगी ॥ मनकेमनोरथकसेताई ॥ पावनकुंसमर्थसोनार्श ॥ ३६ ॥ असत्पणोक

रुद्रदेवहेहा ॥ परमस्वरूपनिदेशुनेहा ॥ दोउकुलकेनियंतजोऊ ॥ पांडुतवकिं  
करनयेकबुसोउ ॥ ४४ ॥ परिक्षितनिजभक्तलियेहू ॥ किनहूस्मनेजोग्यहितेहू ॥ उजेकुं  
मुक्तिदेतहिहाहा ॥ भक्तियोगकबुदेतनतेहा ॥ ४५ ॥ निसनिजस्वरूपरूपलाभार् ॥ तिन  
करतूहमानिवृतिपार् ॥ असेरुषभदेवहूपालार् ॥ जनकुंनिजलोकदेतसनार् ॥ ४६ ॥ क  
ल्याणकेसाधेनमेजाकी ॥ बडुकालबुधिसक्तिहेताकी ॥ देहादिभरणापोषणकांजा ॥  
तिनकेमनोरथकरहिमाजा ॥ असविधजनकेरुषभसुभदाता ॥ तिनकुंनमनकरुसा  
क्षाता ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमत्भागवत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ रुषभदेवकेचरित्रहि ॥ भूमा  
नंदकहेऊ ॥ ४८ ॥ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिहूतभाषामांष  
ष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ मखकरिहरियजिरजमे ॥ प्रारधमेटनजाब ॥ हरिखे  
तमेभरतप्रभु ॥ भजेसप्तमिअध्यान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककदिभरतभक्तबडाही ॥ रुष

विधिसेतेह ॥ ९ ॥ अंग क्रिया जु तद्विबुद्धयागा ॥ प्रवर्तायेत जवसूभागा ॥ तिनमेभयेथ  
मरुपज्ञोक्त ॥ क्रीयाङ्गकोफलजोसोक्त ॥ १० ॥ वासुदेवमेअर्पणाकरही ॥ यज्ञमानसोइध  
रतजितरही ॥ निजमखकतांदिजनेजबही ॥ कुतइव्यग्रहणाकिनतबही ॥ ११ ॥ यज्ञभा  
गकेलेवनहाग ॥ सूर्यादिकसबदेवउहाग ॥ तिनकुंहरिनेत्रादिकमाई ॥ धारतअंगरु  
पज्ञानिताई ॥ १२ ॥ सोरवा ॥ परब्रह्मवासुदेव ॥ यज्ञपुरुषइनकुंकहहि ॥ सूर्यादिकजोते  
व ॥ इनकेअंगमेप्रथकन ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ सूर्यादिकुंपकाराकजेहा ॥ असविधवेदके  
मंत्रतेहा ॥ सोमंत्रकेअर्थहेजोक्त ॥ सूर्यादिसबदेवदिमोक्त ॥ १४ ॥ सबदेवरुपेकरिकेरा  
हू ॥ कर्मकेफलप्रदातातेहू ॥ सबदेवकेदेवविख्याता ॥ नियंतातिनकेसाक्षाता ॥ १५ ॥ त्रि  
नकुंयज्ञतनरतनिष्कामा ॥ वेदोक्तकर्मकरीगुणधामा ॥ प्रथकपरोहिअोरदेवताई ॥  
भरतकुंइनकुंयज्ञेनाई ॥ १६ ॥ असविधचतुर्पणासेजाके ॥ क्रोधकामादिमलमिहिताके ॥

चक्रप्रोरगंस्की ॥ पवित्रकरतनिदान ॥ २४ ॥ दोउप्रोरनात्रीहोतहि आलशामकेवि  
च ॥ चक्रसेअंकितनदी ॥ सबतदियुंमेअपिच ॥ २५ ॥ चोपाई ॥ पुलहाश्रमेभरत  
रहिराका ॥ तिनकेसमिपवनमेअनेका ॥ पुष्पअरुनवपद्मवृजेहा ॥ तुलसिजलक  
हमुलफलतेहा ॥ २६ ॥ इत्यादिकसामग्रिलार् ॥ हरिआराधनकरेहर्षाई ॥ शुधअरुवि  
त्रोकिइछात्मागी ॥ अतिउपनामपायेसुभागी ॥ २७ ॥ युआराधननिरंतरतासे ॥ हरिमे  
हेतवटेअतिजासे ॥ हेतसेरुदयदुविगयेजबही ॥ शिथलपरांपुनयेभरतकुंतबही ॥ २  
८ ॥ अतिहर्षवेगसेअंगमाई ॥ रोमखडेभयेसमुहतांई ॥ हरिमेउत्कंतपरांदिपाई ॥ आ  
सुसेहगरहेरुंधाई ॥ २९ ॥ असेभरततिजस्वामिकेरा ॥ अरुणाचराणकेभानसुदेरा ॥ बट  
आयेनक्तियोगतासे ॥ सबविधपरमानंदहिंसासे ॥ ३० ॥ प्राप्तनयोउररुपद्रुदमाई ॥  
तिनमेदुबगयेबुधिजाई ॥ असेभरतप्रभुपुजाजोऊ ॥ आरंभकरतबिसरिजातसोऊ ॥ ३१



बाल ॥ अष्टाध्यायमेकहे ॥ मृगरूपभयेनुपाल ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुक्रकहेणसमेनृपजा  
ई ॥ शोचस्नानकिनगंडुकिमाई ॥ देहक्रियासेअनिषेकाई ॥ नित्यनिमित्तकर्मकिनजाई  
२ ॥ प्राणवजपतद्विषटघडितार्ई ॥ नदितिरुपरवेठरहाई ॥ तबतेहियलएकमृगिआई ॥  
जलपिवनईछासेधाई ॥ ३ ॥ अतिवाकहोईजलपितजबही ॥ बोलतसिंहठिगआईत  
वही ॥ लोकनयंकरबडनादसनी ॥ स्वभावेंआकुलअतिभयपुनी ॥ ४ ॥ आकुलरुद  
यचंचलनेना ॥ अतिभ्रमतदृष्टिकाकेना ॥ नां ॥ मिटेजलतृषाजाई ॥ भयजुततुरत  
तेकिनदितार्ई ॥ ५ ॥ गर्भजतमृगलिङ्गकोजेहा ॥ भयसेरवसेस्थानसेतेहा ॥ जोतिङ्गसे  
निकसिकेएरु ॥ जलप्रवाहमेगिरेउतेरु ॥ ६ ॥ गर्भपातनदिवेकनिजोऊ ॥ सिंहभयसे  
खेदभइसोऊ ॥ तामेमृगीअतिपिडापाई ॥ निजरोलासेविजोगताई ॥ ७ ॥ कालियारमृ  
गकिनारिधाई ॥ गिरिगुहामेगिरेउताई ॥ प्राणतजिदिनेततरवेवा ॥ जलवेतानेमृगवा

किनेमोमाई। याकारनशरनागतकेरी। उपेसाकोदोषजानेरी। १६। इनलियुस्वारथविग  
रेमेरा। असदृष्टिमोयनाहियरेरा। ममन्प्राधिनमृगबालहिरु। पोषणप्रिणानपाल  
नतेरु। १७। उपशामजुतस्रुदकूपणका। बडसाधुजोजूतविवेका। शरणागतकिरक्षा  
रूपा। कार्यकरेतजिस्वार्थभूपा। १८। सुन्प्राशक्तिकिनमृगमाई। आसनशयनअटन  
स्थानाई। भोजनप्रादिक्रियाकरही। स्नेहसेमनरखिमृगमेतरही। १९। दोहा। कुशाकु  
लपत्रसमिधफल। मुलजललियुवनजात। श्वाननारहिंस्रजिवसे। मृगलियुंशंकापा  
त। २०। संगलश्वनमेजातहि। तबमूरखमृगबाल। मगमेठाठरहतजबे। लितउगइत  
तकाल। २१। दोपाई। अतिहेतजुतस्रुदयहेरु। खंभासेलेतगोदमितेकु। जडातछति  
यांमेलेजबही। परमहर्षकुंपावततबहि। २२। हरिपुजाप्रारंभजबकरही। विचउठिदे  
खतमृगकुंतरही। मनकुंसस्थकरिकेरु। आशिर्वादहिदेवततेरु। २३। हेपुत्रतवकल्या

मेरोमृगनहिप्रायेणहू॥ मृगारुपराजकुमारसोअर्द्ध॥ सुकृतदिनममसुखिकरेनाई॥ ३२  
॥ सोरवा॥ बक्रविधसुंदरजोउ॥ दर्शनकरनजोग्यमृगकि॥ विनोदकसेसोऊ॥ ममवेदमे  
टेगिअर्द्ध॥ ३३॥ चोपाई॥ क्रिडासेजुतसमाधिकरके॥ मिचिनेनवेतुंध्यानधरके॥ प्रेमजुत  
क्रोधकरिकेजोउ॥ अतिचक्रितममदिगअर्द्धसोउ॥ ३४॥ जलबिंदुसमकोमलशृंगा॥ तिन  
केअग्रघसतसमअंग॥ कृतइअजुतदर्शनदेतशर्द्ध॥ चयलपणामेइषणपमाई॥ ३५॥ उराये  
दमतवअतिभयलाइ॥ तुरतक्रिडासवदेतवहाई॥ इंदिसबरहेनिश्चलहोई॥ कषिकुमारजु  
वेतसोई॥ ३६॥ असविधविलापकरिकेराजा॥ आश्रमसुतरेदेस्वनकाजा॥ मृगबालरबुर  
जुतभुमिजोई॥ बोलतसंघांतहुदेहोई॥ ३७॥ असभूमिनेक्यातपकिना॥ विनयसहितमृग  
बालप्रविना॥ तिनकेअतिसुदमनिकजेरू॥ मंगलरुपकोमलरबुरतेरू॥ ३८॥ तेदिजुत  
पगकिपंक्तिमाई॥ ममइअमृगहिदेतवताई॥ दुखिदिनमोकुंअतिजानी॥ मृगपदसेनिजअं

रु॥ साक्षात्सुतस्युत्तमयेरु॥ मृगकेबालकरूपेहोई॥ बुरोप्रारध्वन्प्रायेकोई॥ ४६॥ सुं  
अंतरायसेगयेहनाई॥ योगक्रकोअरंभहिजाई॥ पालनपोषणप्रिणानमाई॥ आशक्ति  
सेमृगकुंलडाई॥ ४७॥ निजप्रात्माकिचिंताजेहा॥ विसरिजातभरतजितेहा॥ तवकराल  
वेगमिटेनजोऊ॥ मृत्युसमयप्रायेउसोऊ॥ ४८॥ उंदरदरमिअहिजुकाला॥ सुंमृत्युआ  
वतविक्राजा॥ तवदिगठादेसुतकिन्याई॥ शोककरतमृगदेखेताई॥ ४९॥ मृगमेमनप्रवे  
शकराई॥ मृगजुतनिजतनुदेतबहाई॥ मृतशरिरकेपिछेजेहा॥ पुर्वजन्मस्मृतिनहिमे  
हा॥ ५०॥ दुजेप्राकृतजिवकिन्याई॥ मृगशरिरकुंपावतजाई॥ सोतनुमेमृगपणाकोजेरु  
कारणाहेसोसंभारितेरु॥ ५१॥ हरिअराधनप्रतापसेरु॥ तापजुतचितमेबोजतगरु॥  
बडोकष्टमोकुंपरेआई॥ आत्मनिष्ठहरिभक्तकहाई॥ तिनकेमारगाऊसेजोऊ॥ गिरके  
भ्रष्टनयोमेसोऊ॥ ५२॥ अतिशोसागकिनसबसंगा॥ एकांतसुधवनवशिउमंगा॥ धिरज



तिनकुं गिनतप्ररतबुधिवंता ॥ गंडकिमेजलमेनिजार् ॥ मृगदेहकुं देतवहार् ॥ ६१ ॥ दोहा ॥  
इतिश्रीमतभागवत ॥ पंचमस्कंधमे ॥ भरतजिकेचरित्रजो ॥ भूमानंदकहे ॥ ६२ ॥ ॥ ६  
तिश्रीमहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिहृतभाषायां अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥  
॥ दोहा ॥ रागादिकअभावसे ॥ भद्रकालिपशुकीन ॥ तिनमेनिरविकारिपणू ॥ नवमेमे  
कहिदीन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शुककहेअंगिराकुलमाई ॥ जन्मेदिजमेश्येष्टकहाई ॥ शमदम  
तपवेहाध्यनकरही ॥ त्यागअन्तादिदानअनुसरही ॥ २ ॥ विनयविद्यासंतोषसदाई ॥ आ  
त्मज्ञानतितिक्षाजाई ॥ ईशारहितपणोरहिगहू ॥ आनंदादिगुणजुततेहू ॥ ३ ॥ उतमदिजकुं  
थेवडनारी ॥ तिनमेनवसुतउपजायारी ॥ निजतुलशास्त्रस्वभावबाना ॥ रूपआचरण  
उदारसुजाना ॥ ४ ॥ इतनेगुणजुतनवसुततेहा ॥ दुसरिछोटिनारिथेहा ॥ इनमेएकसु  
तसुताजेहू ॥ जुगलउत्पनहोतहेतेहू ॥ ५ ॥ सोजोरिमेसुतथेजोक ॥ परमनकराजजिदिहि

ई॥ ज्युं सुभनिदेखावतमोई॥ १३॥ वेदप्रनावेगेंयाकजा॥ प्रथमव्याहृतिसहितराजा॥ पुनि  
प्राणवअरुशिरजुतजेदा॥ त्रिपदिगायत्रिननाततेदा॥ १४॥ वैत्रवैशाखजेष्टअषाढा॥ भन  
इतोभिआइनगाढा॥ आत्मातुअवलभसुंतजाई॥ हितकरिचितजोरेतामाई॥ १५॥ शौच  
अधयनव्रतनिमजेता॥ गुरुअग्निकिसेवातेता॥ इत्यादिउपकुंवारिजाजोक॥ ब्रह्मचारि  
केकर्मसोक॥ १६॥ तिनकुंआदरकरतनयदपी॥ कर्मकिशिक्षाकरकेतदपी॥ सुतकुंपंडि  
तकरनोजेहू॥ पुर्णामनोरथभयोनतेहू॥ १७॥ सावधानजोकालकदाई॥ हनेविप्रकुंघरमे  
आई॥ तातसेसुतकुंशिवनुंजोक॥ असतआग्रहकरिगयेसोक॥ १८॥ तबछोटिजोदिज  
किनारी॥ निजसुतसुताशोकपदिगधारी॥ सतिहोईकेदारारहू॥ पतिलोककुंपायेतेहू॥  
१९॥ दोहा॥ तातमृत्युपायेजबजउभरतकुकेआत॥ जरमतिहेयुंजानिके॥ कछुनहि  
सिखात॥ २०॥ चौपाई॥ जरभरतकोमहिमाजेता॥ नवभ्रातनहिजानतेता॥ कर्मकांडेकुंश

३१८॥ यदावटलेलविप्रहेहू॥ तिनकोस्वरूपनजानेकेहू॥ ऐसेजनअपमानहिकरही  
॥ तोभिन्नरतभूमिपरफरही॥ २९॥ ओरगोहकाजकरिकेजोउ॥ सुखकुकोअन्यपावेसो  
उ॥ तबनिजभाइखेतलेजाई॥ अन्तलियेकाराजलपाई॥ ३०॥ सोरठा॥ उंचनिचजातनाई॥  
काराबांधनतोरनमि॥ करनलगोसुंताई॥ काद्वईतउतगरतहि॥ ३१॥ चोपाई॥ निजभ्रा  
तनेदिनेलाई॥ चोखाकराकिखोलकुशाकाई॥ शालेअइदअरुहंडियांमाई॥ लमेजरअ  
न्तदेतहिताई॥ ३२॥ तिनकुंजिमतअमृतमाई॥ पुनिराकचोरनूपभिलकहाई॥ पुत्रकु  
किईछायेतार॥ भद्रकालिदेविलियेलाई॥ ३३॥ पुरुषपशुमारनकेकाजा॥ छुटिबंधनप्रा  
रखेसाजा॥ तिनकिपदविलेकेथाये॥ चोरराजकेचाकरअप्राये॥ ३४॥ पुरुषपशुनहिपा  
येराहा॥ अंधारिअर्धरतियांतेहा॥ रतिमेविरअसनकरिजेहू॥ मृगवराहसेंटीवततेहु  
३५॥ अंगिराकुंलमेउतमजोक॥ तिनकेसुतजउभरतसोक॥ तिनकुंदैवजोगकरितेहा॥ दे

रेविहारा ॥ तिनको अतिदारुणा कर्मार्थि ॥ कशाइ कुंकुं भिघटितनाई ॥ ४४ ॥ जडभरतवधरु  
पदिजोक ॥ भद्रकालिदेविकर्मसोक ॥ भरतके अति तेजसेतेहा ॥ निजतनु अतिजरनल  
गोहा ॥ ४५ ॥ प्रतिमासे निसरिततकाला ॥ अतिअमृषक्रोधकरिकराजा ॥ चगरभृकु  
दिरुपसाखाई ॥ कुटिलडादमरातांहगजाई ॥ ४६ ॥ अतिजयंकरमुखजुताकाहा ॥ जनुज  
गहननेयारभयेहा ॥ क्रोधकरिअटाटहासिकीना ॥ निजधलजुसेतेके प्रवीना ॥ ४७ ॥  
भरतकेवधलियेअसिथेहा ॥ तामेकाटेशिरसबकेराहा ॥ दुष्टपापिजुकेगलेताई ॥ स  
वतउदमरुधिरमद्यमाई ॥ ४८ ॥ निजगाणसहितपानकरिहाहा ॥ तिनकेमदमेंविफल  
तेहा ॥ भद्रकालिपार्श्वनिजटेरी ॥ अतिउचेस्वरगानकरेरी ॥ ४९ ॥ चोरशिररुपकंडकं  
उछारी ॥ नचतक्रिडतलिलाकरिभारी ॥ शुककहेवडपुरुपमेजेरु ॥ अभिचाररुपअप  
राधतेरु ॥ ५० ॥ करनहारेकोबुरोकरही ॥ महानपुरुषकुंकचुंननरही ॥ ब्रह्मरुपसरुद



३॥ इनमें उं क करे को आर्षी केवल जड परी वर तेज बही ॥ जड कुं विकार होत न त बही ॥ ३ ॥  
सो उं कामे टन के काजा ॥ भरत कुं को महात्म्य कर जा ॥ सर्वज्ञता वैराग्य हि जेऊ ॥ आत्मनि  
ष्टा कि दृढता तेऊ ॥ ४ ॥ अहंमत्त्व कुं के सो त्यागी ॥ हरिमें भक्ति अचल जुत रागी ॥ इतने गुण ज  
ड भरत मिर दही ॥ तिन कुं देखावन हम क दही ॥ ५ ॥ जड रूगण को संवाद जेऊ ॥ कऊ परी ५  
क्षित सुनिले तेह ॥ सिंधुसौ विदेवा को राजा ॥ आत्मविद्या जानन काजा ॥ ६ ॥ कपिल मुनिके आ  
श्रम तारी ॥ जाते ये तिनके मगमाई ॥ ईशुमति नाम नदि आर्षी ॥ ताके तिर परपाल खिलारी ॥ ७ ॥  
बड़े भोरने आग्यादीना ॥ पालखि दोन पुरुष मति हीना ॥ दुंदत देव जोग करि गहा ॥ श्रेष्ठ विप्र  
कुं पाये तेहा ॥ ८ ॥ सुष्ट पुरुष हे कठिन अं गाई ॥ भार होवेंगे वृष खर न्याई ॥ समर्थ जानि पकरे  
तारी ॥ प्रथम वेर पकरे येतारी ॥ ९ ॥ तिनके भेले बल करि जोरे ॥ पालखि दोन जोग्य नै होरे ॥ म  
हानुभाव जड भरतराह ॥ सिविका उवात हे तेह ॥ १० ॥ सोरना ॥ श्रेष्ठ विप्र मे जीउ ॥ हिंसा कि

११८॥ तिनकुं कहे फनो हे भाई बडुयके निश्चेतम आई बडुडरसे तुम एक उठाई तुम  
कुं दो ते बडु काल जाई १६॥ अति स्थूल तुम तो नहि भाई कविन अंग तो रे को नाई हृथ  
वय कुं से परा भव पाई हे मित्र तव संगिक हाई सोई सिविका उठात नाई अस विध म  
स्करि किन बडु ताई २०॥ दोहा ॥ जडु भरत सब सूनीके विन बोले उठात ॥ पुर्व किन्याई  
पालखी ॥ चलितिनके संगत ॥ २१॥ चौपाई ॥ मिथ्या रुप रचना हे जामे ॥ अविद्यारचिपं  
चमुततामे ॥ इंद्रि अरु शुभ्र शुभ्र कर्माई अंतःकरणा हि जामे रहाई २२॥ अस विध अं  
तक छेवर माई ॥ अदंम मत्व अतिमानाई नहि आगे पाकि ने राह ॥ ब्रह्म रुप निज तव  
मे तेह २३॥ पुनि विषम भयी पालखि जवही ॥ अतिकोप करि रूगाणा तवही ॥ जडु भरत कुं  
कदि जिवत जोऊ ॥ मरगये हो क्वा कहु सोऊ २४॥ तुछ किन मोकु मेज ॥ गस्वामि ॥ मम  
आग्या संग करि कुकामी ॥ प्रमत्त कुं शिक्षा करु जेसे ॥ सब जन कुं यम करत हितेसे ॥ २५

पुनि ॥ जयकलहरच्छातन ॥ ज्ञानिशाप्रितिक्रीध ॥ ३३ ॥ अहंकारेकरिमद होवतहेअरुजो  
कपुनि ॥ सबविकाररुपद्रुद ॥ तनुमानजुतजिवकुंदे ॥ ३४ ॥ चोपाई ॥ देहमानरहितमो  
यनाई ॥ हेनूपतुमकदिजिवतमृताई ॥ जिवतमरणाकमोकुंनई ॥ परिणामिसबकेपरभा  
ई ॥ ३५ ॥ परिणामिवस्तुहेजेती ॥ प्रतिक्षणाउपजेनवाहितेती ॥ तुमकहिसबकेस्वामिहमेरी ॥  
ममआग्याकुंउलंघेरी ॥ ३६ ॥ स्वामिसेवकभावहेजोव ॥ जोपक्षेनिश्चरहेसोक ॥ तवआग्ण  
अरुपालकजेरु ॥ स्वामिसेवकजोगघटिततेरु ॥ ३७ ॥ तवराज्यभंशहोवेजबही ॥ हमराज  
होजावेतबही ॥ तुमसेवकहमस्वामिकहाई ॥ युविपरितपरागुसंसारमाई ॥ ३८ ॥ स्वामिसेव  
कभावहेजेरु ॥ प्रभुविनओरमेअखजनतेरु ॥ कहोगिहमराजाहेजांधू ॥ तेरास्वामिमेहो  
तादू ॥ ३९ ॥ नृपचाकरदोमेदहिजेहा ॥ बूधिऊमेजोकहहितेहा ॥ अघद्वारविनहमदेखतना  
इ ॥ शिक्षकपालकअसत्यकहाई ॥ ४० ॥ तवनृपकोअभिमानहेजबही ॥ कहाकरुमेकहोतु

उत्तरिगिरेचरनशिरनाई ॥ ह्यमाकरावनबोलतराजा ॥ कुनतुमविचरतगुप्तसमाजा ॥ ४  
५ ॥ ब्राह्मणामध्येकुनतुमहोऊ ॥ यज्ञोपवितधरिरहेसोऊ ॥ दत्तात्रेयआदिअवधूता ॥ ता  
मेकुलतुमकिनकेसुता ॥ ५० ॥ कहांरहोअसथलकुंआये ॥ मोरमंगललियुंतुमचजा  
ये ॥ कपिलमुनितुमहोकिनारी ॥ इंद्रकोजोवज्रकहाई ॥ ५१ ॥ शिवत्रिशुलयमदंडकिजो  
ऊ ॥ अग्निअर्कचंद्रवायुसोऊ ॥ कुबेरअस्त्रादिकसबयाकी ॥ शंकाहरिपावेहमताकी ॥  
ब्राह्मणकुलअपमानकिजेहा ॥ अतिशंकाहमपावेतेहा ॥ ५२ ॥ हमनेपुछेप्रथमहिताको  
॥ असंगतुमउतरकरेयाको ॥ ज्ञानरुपप्रतापतुमछाई ॥ अपारमहिमातोरकहाई ॥ ५३ ॥  
योगशास्त्रसेग्रंथितजेहा ॥ तीरवचनमेमनममगाहा ॥ प्रवेशकरनकुंसमर्थनाई ॥ आ  
त्मनिष्केगुरुतुमभाई ॥ ५४ ॥ हेब्राह्मणयोगेश्वरहोऊ ॥ ज्ञानकलासेप्रगटेसोऊ ॥ साक्षात  
हरिकपिलकहाई ॥ तिसकुंशरणापुछनहमआई ॥ ५५ ॥ सोईकपिलमुनितुमेनाई ॥ अब्ब



पालखितठाइतासेतीई ॥ कष्टभयोहमजानेसोई ॥ ६३ ॥ कहितुमस्वामिसेवकभावा ॥ अ  
चलनहितहांककुबुळावा ॥ चलहेतोनिनृपदेजांजू ॥ जनशिक्षारक्षणाकरेताजू ॥ ६४ ॥  
तुमकहिस्वध्वप्रमताई ॥ हंडशिहज्जुलोददलाई ॥ सुबुद्धरिदासनृपतिजोहोई ॥ सध्वादि  
ककुंशिक्षासोई ॥ ६५ ॥ पिष्टकुंपेषणसोवकुंकहाई ॥ सध्वपापुजोमिटेनाई ॥ तोनिनृपशिक्षा  
करेताई ॥ प्रजाकुंपुनिपालेसदाई ॥ ६६ ॥ हरिआपारूपनिजधर्मजोउ ॥ धर्मरूपहरिआराध  
नसोऊ ॥ तिनकुंकरिनृपपापबहाई ॥ सफलजन्महोजातहिभाई ॥ ६७ ॥ याकारनतुमबोले  
जोऊ ॥ मोकुंविपरितनाषहिंसोऊ ॥ हेडुखिजनकेबधुस्वामी ॥ नृपअभिमानसेमदहमपा  
मी ॥ ६८ ॥ बडसाधुतुमकुंहमजेरू ॥ तूळकरिगारेहमतेरू ॥ हितजुतमित्रदृष्टिकररू ॥ संत  
अपराधरूपअघहररू ॥ ६९ ॥ कहोगितोरअवज्ञासेंरू ॥ ममकखुविकारनहिभयेरू ॥ तव  
तोकुंअघलागेकेसे ॥ तहांककुमेसनकुंतेसे ॥ ७० ॥ सरवारुसरुदहोसबकेरे ॥ मानअ

क

समानेह ४ ब्रह्मगृहश्रमसंबंधिजोक ॥ मखविस्तारजिनमेहेसोउ ॥ अिसिविद्या  
मेवेदवादा ॥ अधिकपणेसोहतससादा ५ ॥ तिनमेतत्ववादहिजोक ॥ हिंसारागद्वेष  
विनसोक ॥ ब्रह्मविधप्रकाशमाननहोई ॥ वैदिककर्मकिआगेसोई ६ ॥ हरिसबंधविन  
वैदिककर्मा ॥ तत्वविचारदिगसमनशर्मा ॥ राजनृत्यादिलोकिकजोक ॥ अवहारसत  
क्युहोसो ७ ॥ ररुगाणजोउपनिशादमाई ॥ हिंसारागद्वेषविनाई ॥ तत्ववादसबविध  
हेजबही ॥ उपनिषदस्यत्रानीसबही ८ ॥ गृहसंबंधिसरवसबजाई ॥ स्वप्नज्युजानितजे  
नताई ॥ अैसेपुरुषकुंबानिराहा ॥ स्वरूपज्ञानलियुंहीतनतेहा ९ ॥ सोरवा ॥ राजनृत्यदि  
जोउ ॥ लौकिकव्यवहारकहे ॥ काम्पकर्मपरसोउ ॥ वैदिकव्यवहारहिमो १० ॥ वोपाई ॥  
वैराग्यआत्मस्थितिबलताई ॥ असत्कहिजउभरतताई ॥ वैराग्यविनतरकोमनजेह ॥  
त्रिगुणरूपवर्ततहेतेह ११ ॥ सोनरमेधर्मभक्तिजेहा ॥ आत्मज्ञानहिदर्शततेहा ॥ ति

जोऊ ॥ व्यवहारसविकरतमनसोऊ ॥ क्षेत्रज्ञानकर्मफलदाता ॥ असहरिकिसाख्यजु  
तसाक्षाता ॥ १६ ॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिमाई ॥ मनकृतसुखदुखभोगेजिवाई ॥ जिवकुंबंधमो  
क्षपराजोऊ ॥ तिनकोकारणमनहेसोऊ ॥ १७ ॥ दोहा ॥ गुणोयुक्तमनजिवकुं ॥ इरबके  
अर्थहोत ॥ निर्गुणमनकल्यानलियु ॥ समयपणोसुजोत ॥ १८ ॥ घृतवतियुक्तेहिदिपजो  
भजेसिखाजुतधूम ॥ घृतवतिविनशुधअग्निको ॥ स्वरूपनजेसुनुतूम ॥ १९ ॥ चौपाई ॥  
त्युंगुणाकर्मयुक्तमनजोऊ ॥ वतियुं कुंकुं प्राशरहिसोऊ ॥ गुणाअरुकरहितजबहे  
ई ॥ आत्मतत्वकुं प्राशरेसोई ॥ २० ॥ वतियुपंचकर्मइंदियाई ॥ ज्ञानइंदिपंचओरकहाई  
अगपारमुंअभीमानहिजेरु ॥ तिनकुंरहनहूमिककृतेरु ॥ २१ ॥ पंचमात्रपंचकर्मजोऊ  
तनुअ ॥ अगमिसंतकहिसोऊ ॥ शहस्पशरूपरसगंधाई ॥ ज्ञानइंदिकेविषयकहाई ॥  
२२ ॥ मलत्यागरुअरुसंभोगाई ॥ चलनिबोलनिकरक्रियाई ॥ कर्मइंदिकेविषयजाई ॥ म

ही ॥ स्वप्रकाशामुरतिअजन्माई ॥ ब्रह्मादिके स्वामिकहारी ॥ ३४ ॥ भगवानरुनारायणजोऊ ॥  
वासुदेवादिनामहि सोऊ ॥ निजयोगमायाकुसेरु ॥ जिवमेअंतर्यामिहितेरु ॥ ३५ ॥ नियं  
तापगोकरिसोरहही ॥ स्थिरचरमेवायुज्युंकहही ॥ प्राणिमध्येप्राणरुपहोई ॥ प्रवेशकरि  
निममेरखेसोई ॥ ३६ ॥ प्रकृतिपुरुषसेपरहेजोऊ ॥ आधारसबक्षेत्रज्ञसोउ ॥ जगमेअंत  
र्यामिरुपोई ॥ प्रवेशकरिनिममिरखेसोई ॥ ३७ ॥ हेररुगारातनुधरजनजेरु ॥ बंधनकारिसं  
गतजितेरु ॥ जितिषट्शत्रुकुंवरालाई ॥ जिवआत्माकेज्ञानकुंपाई ॥ ३८ ॥ मनरुपमायाकु  
कुंबहाई ॥ आत्मातत्वपरमेश्वरताई ॥ ज्यांनुनहिजानतजनरु ॥ त्यांनुअमेसंसारमिते  
ऊ ॥ ३९ ॥ जिवकोसूक्ष्मशरीरमनएहा ॥ संसारतापकेरवेतरुपेहा ॥ शोकमोहदुखराग  
लोभाई ॥ वैरकरावनमनविननाई ॥ ४० ॥ देहादिकेपदारथमाई ॥ ममताकरातमनजन  
ताई ॥ ररुगाराजिवकोशत्रुएरु ॥ अतिशोप्राकृतमवंतहितेरु ॥ ४१ ॥ उपेक्षाकरीदिनेनुजव



पसेतपेकोऊ ॥ ताकुंसितजलसुखकरमोऊ ॥ कुञ्चितदेहमेअभिमानाई ॥ सोईसर्पने  
काटिखाई ॥ ५ ॥ आत्मविवेकरूपदृष्टिजेहा ॥ तबवचअमृततुल्यहिगहा ॥ औषधिज्युम  
मअतिशुभकारी ॥ ममसंशयपुछेगिविचारी ॥ ६ ॥ अबतोप्रथमवचनतुमकीना ॥ अ  
धात्मयोगमेगुधिदिना ॥ इखेंसमजायअसेहेरू ॥ सुखेसमकुंयुंकहोतेरू ॥ ७ ॥ यह  
वचसुननकेलियेमेरा ॥ चितमेउछाहरहदिहेरा ॥ प्रसिधपाणेदेवातहिजेहा ॥ नारवह  
नरूपक्रियातेहा ॥ ८ ॥ तिनकोफलश्रमसांचकहाई ॥ तिनकुंअसत्यकहततुमभाई ॥ य  
थार्थतत्वविचारकाजा ॥ नदिहोतयुंकहिमहागजा ॥ ९ ॥ असविधतोरवचनकेभाई ॥ मेरो  
मनअतिरहेमुकाई ॥ तुमनेसिबिकाउताईजेरू ॥ दोषजगोमोकुंसत्यतेरू ॥ १० ॥ सीर  
गा ॥ आत्मस्थितिवैराग्य ॥ बलऊसेतुमअसत्यकहि ॥ मममनपातनमाग ॥ ज्युंसम  
कुसुंमोयकहो ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ रऊगणकोशोकमिटनताई ॥ आत्मस्थितिकोबलदेवा

क्रिया कुंसेससजोहोई। मोकुंकदिदेखाओसोई। १९॥ दोहा ॥ तुमकहोगिभुमिसत्स  
हे ॥ तिनकिककुंमेगाथ ॥ असविधपृथविंशष्टकुंकी ॥ प्रवृत्तीहेजोनाथ ॥ २० ॥ अर्थवि  
नासोईशहृहे परमाणुकेमाई ॥ भूकोलयहोइजानहे ॥ सूक्ष्मकराकिमाई ॥ २१ ॥ चोपाई  
॥ परमाणुभिहेजोकोऊ ॥ अविद्यामनसेकल्पेसोऊ ॥ याकारनसोअससकहाई ॥ जिव  
केसमुहसेनुमिरचाई ॥ २२ ॥ कृष्णखुलछोटुमोटुजेहा ॥ कार्यकार ॥ एप्रपंचतेहा ॥ चेतन  
अचेतनसबहिजोऊ ॥ स्वभावसंस्कारइव्यहिसोऊ ॥ २३ ॥ कालकर्मअसविधनामाई ॥ माया  
कृतसोप्रपंचकहाई ॥ अससहेधुंजानोएरू ॥ तुमकहोगिक्यासत्परहेऊ ॥ २४ ॥ षट्श्रेष्ठ  
र्यगुणसंपंना ॥ याकारनभगवानकहना ॥ नारदआदिकबडरूषिजेऊ ॥ वासुदेवकुंस  
सकहेतेरू ॥ २५ ॥ वासुदेवविनओरहिजोऊ ॥ तिनकुंअससकहतहिसोऊ ॥ जानरुपश्र  
तिस्वधहेहा ॥ परमसत्परकहितेहा ॥ २६ ॥ भिंतरबादिभनकुंनारी ॥ परिपुर्णनिर्वि

पायेजुजाई॥ हृदयमकिसेवासेतामाई॥ उत्पन्नयेउस्मृतिजेहा॥ मृगतनुमिमोयतजत  
नतेहा॥ ३५॥ याकारनहमजनसंगसेरु॥ शंकापाईअसंगरहेरु॥ कौमोयपैशानेन  
जेसे॥ हेरुगणाफिरुनुपरतैसे॥ ३६॥ याकारनपुरुषजोकीश॥ त्यागिमहत्पुरुषकोसो  
ई॥ निकोसंगकरिकेनयेजेऊ॥ ज्ञानरूपितरवारसंतेरु॥ ३७॥ छेदिदेहगेहमेमोहाई॥ ह  
रिचरित्ररुनेआरुगाई॥ तिनकरिस्वरूपकिस्मृतिपाई॥ संस्मृतिमगपरदरिपातभाई  
॥ ३८॥ दोहा॥ ॥ इतिश्रीमत्तनागवत॥ पंचमस्कंधमेऊ॥ जडभरतकेचरित्रजो॥ भूमानंदक  
हेऊ॥ ३९॥ ॥ इतिश्रीमहजानंदस्वामिश्री॥ षष्ठमभूमानंदमुनिकृतभाषायांकादशोः॥ अ  
थः॥ १२॥ ॥ दोहा॥ ॥ अविरक्तकुंवैराग्यकि॥ इदताकेलियुकीन॥ निरुपणानवअट  
वीको॥ तेरअथ्याकौदिन॥ १॥ चौपाई॥ संसारमगकिपारजवपाई॥ पुनिप्रभुकुंपावे  
जाई॥ सोमगप्रसिधरूपेजोऊ॥ वैराग्यलियुवर्णनकरीसोऊ॥ २॥ प्रसिधमार्गसुसब

१॥ रत्नगिरिदृगमेन्द्रार्द्रा ॥ सोसाथकच्छुनहिदेखे ॥ १० ॥ चोपादी ॥ अह्नपतमरांकेत्राद्वार्द्रा ॥ सु  
निकेकानमेपिरापादी ॥ घृत्तशब्दमेमनपिडादी ॥ सुधाजगिअतिश्रीडुखदादी ॥ ११ ॥ पापरु  
पडुखदभिलांमादी ॥ वृक्षकुंअनुसरेउजादी ॥ कबुजलविननदिसनमुखजेरु ॥ जलपिव  
नलियेदोरततेरु ॥ कबुजांजवांजलदेखधादी ॥ कबुअन्नविनपरस्वरादी ॥ १२ ॥ एक  
डुजादिगजाचतराकु ॥ कबुदवमेडुखपायेतेरु ॥ कबुयहराक्षसहरेघानां ॥ कबुसरवि  
रमेधनहरांना ॥ १३ ॥ चितमेखेदनुतसार्थारु ॥ शोककरिमृजांयेतेरु ॥ पिराजुतपुनि  
मुष्ठापांई ॥ कबुकगंधर्वपुरमेजादी ॥ १४ ॥ एकमुकुतरहेहर्षादी ॥ कबुकंठकंकरलगेपगा  
दी ॥ गिरिपरचरनेरुतजबही ॥ सुदासमनहोइवेतततबही ॥ १५ ॥ ज्ञाणक्षराजतराअग्नि  
सेहा ॥ पिडपायेसार्थअतितेहा ॥ ककुकुंठंविकेपरारु ॥ क्रोधकरिकेंलरतहितेरु ॥ १६ ॥  
कबुअजगरनेगिलेमुखमादी ॥ सोजनकच्छुहिजानतनारी ॥ कबुकुवनमेसार्थनेत्यागा



रहूगणामार्गमेजोजोऊ ॥ ज्यांज्यांमरजावेजनकोऊ ॥ त्यांत्यांतिनकुंछोरितेहा ॥ जन्मेकुं  
उठाईचलेहा ॥ २४ ॥ क्रिडाकरतचलतसंघाथा ॥ अबहुंपिछेकिरेनसाथा ॥ मगकुंपार  
पमावेजोऊ ॥ असेयोगकुंपातनकोऊ ॥ २५ ॥ शूरविरदिशगजजितहाग ॥ मोरभूमि  
हेनाहितिहाग ॥ असविधभूमिलियेकरिवेग ॥ बरनृपजुधमिमरिगिरेदेग ॥ २६ ॥ दं  
इअरुवैरतजेहिजेरू ॥ योगिप्रभुपदपायेतेरू ॥ सोपदकुंपावतनहिराजा ॥ कोऊ क  
जनसोतजिसमाजा ॥ २७ ॥ बेलिपकरिअनुमरेराह ॥ मितस्वरबोलतपक्षितेरू ॥ तामे  
स्पृहाकरिशक्तनयेऊ ॥ कबुकसिंहसेउरपायेरू ॥ २८ ॥ बककंकगृध्रपक्षितांई ॥ सरवाप  
णुकिनसंगेजाई ॥ सोपक्षीनेठगोनजबही ॥ हंसकुंमेप्रवेशकिनतबही ॥ २९ ॥ तिनकोस  
भावगोठेनाई ॥ वानरजुधमैपैवेजाई ॥ वानरकुंकिक्रिडासेराह ॥ इंदिमैअतिफरवपा  
येरू ॥ राकराककोमुखदेरिजोऊ ॥ मरणाकालभुलीरमेडुमसोऊ ॥ सुतदारपरदयाजुत

निरमल भक्ति होत दिनाके ॥ ३६ ॥ यह बात कछु अज्ञुत नांई ॥ मूरुर्त्त तोर समागमता  
ई ॥ मम अविवेक कुतर्क होई ॥ बध मुल तो निह नाये सोई ॥ ३७ ॥ वर्ध बाल जवान हे जो उ  
उपवित पाइ वेद भने को उ ॥ सो ब्रह्म चारि आदि जेता ॥ ब्राह्मण कुकुं न मु मे तेता ॥ ३८ ॥  
अवधुत वेशा धरिके जे हा ॥ अपर विचरत ब्राह्मण ते ॥ तासे नृपको कल्या न होरु ॥ मम  
त्याइ शोद करोन को कु ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ शुक कहे उतरा सुत कुं ॥ अंगिरा कुल केरु ॥ ब्राह्म  
ण सुत जइ भरत जो ॥ श्रेष्ठ महि मा जेरु ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ निज कुं अपमान करहि जो कु ॥  
सिंध देवापति रकु गण सो उ ॥ तापर परम करुणा लाई ॥ आत्म तत्व उपदेशा करि ताई  
४१ ॥ ररु गण किने प्रार्थना जैसे ॥ दया उपजे भरत कुं तैसे ॥ पुनि चरन शिर न मे नृप ज  
बही ॥ जइ भरत विचरे सुपरत बही ॥ पुणां सिंधु ज्पुत्रांत हिजाकी ॥ इंडी जुत अंतःकर्ण  
ताकी ॥ ४२ ॥ सज्जन भरत से सब विध पाया ॥ परमात्म तत्व ररु गण राया ॥ निज जिव मे

ह



हि॥ चतुर्दशे अध्याये ॥ चोपादी ॥ परिक्षितने पृच्छे शुकमुनी ॥ कहत यथारथ हेतुं पूर्ण  
सकल जिवकुं कर्मफलदाता ॥ परमेश्वरविष्णुसाक्षाता ॥ २ ॥ तिनके वशावर्तत जो मा  
या ॥ इनुने तनुकुं आत्ममनाया ॥ ऐसे नरकुं सत्वादिनिना ॥ गुणभेदकुं नेवांटीदीना ॥  
३ ॥ शुभअशुभमिश्रितकर्माई ॥ इनुने नइदेहपंक्तिताई ॥ तिनकुं धरनोत जनो जोऊ ॥ ति  
नको नामहि संसारसोउ ॥ ४ ॥ तिनको द्वारघटइ द्विकहाई ॥ इनुने शरिसंसारमाई ॥ गिरिव  
नमगसमविकटदिजारी ॥ किये कर्मके फलदाराई ॥ ५ ॥ फलविनबहुविघ्ननुतजेहा ॥  
वेषाकरतहि जिवसबतेहा ॥ इअसंचनलियुं वणिकजेसे ॥ तसरचलदिसंघाथतेसे ॥ ६ ॥  
मसाणतुल्यअमंगलरूपा ॥ संसारदेवनबशे अनुपा ॥ तिनकुं पायो जिवसमूहा ॥ बहु  
विधतापेतपेनिशीडहा ॥ ७ ॥ तापकुं हरनहा राजोऊ ॥ हरिरुपगुरुके चरनसोऊ ॥ तादि  
नमरज्जुसेवनहारा ॥ ऐसे साधुने निरधारा ॥ भक्तिहुको मार्गहे जोऊ ॥ अबलुंबहिपा

देवगोवर्षहिसोऊ ॥ बौवनकोसमेआवेजबही ॥ तृणवेलिघनहोवततबही ॥ १६ ॥ अ  
सविधगृहस्थाश्रमहिजोऊ ॥ कर्महुकोहेबहेसोऊ ॥ कर्ममुलक्षयहोतनजासे ॥ काम  
हुकोकरंरेतासे ॥ १७ ॥ कपुरभाजनसेलिननिकासी ॥ तोजिसुगंधरहेजुवाशी ॥ सुंग्रह  
आश्रमहुकेमाई ॥ वासनाकोहयहोवतनाइ ॥ १८ ॥ ग्रहिकुंडांसमचरतुल्याजोउ ॥ निंच  
मबुष्पतिरुपक्षिसोऊ ॥ चोरमुषकमिलिपिरतजबही ॥ धनदिनसंसारमिभमेसबहि  
॥ १९ ॥ अविद्याकामकर्मजुतमनही ॥ तिनसेमानतससजुजनहि ॥ गंधर्वनगरतुल्य  
हिजेरू ॥ असत्यहेअसनरलोकतेरू ॥ २० ॥ मिथ्यादृष्टिजनकबहुगहा ॥ पानभोजन  
त्रियसंगेहा ॥ इत्यादिकव्यसनमेजेरू ॥ लोलुपहोइनरलोकमेरू ॥ २१ ॥ जांकवाकिज  
लतुल्यकराई ॥ देखिहोरतविषयताई ॥ कबुसकलदोषहुकोगेरू ॥ अग्निकिविषासुवर्ण  
हेरू ॥ २२ ॥ सुवर्णवर्णसमवर्णजाको ॥ सोरजोगुणबुद्धिमेताको ॥ संवर्णलेवनइछतए



रू॥३०॥ पूर्वकृतजनमोगिरहेजबही॥ काकतु इकारस्करतबही॥ इत्यादिकअतिपा  
परुपाई॥ वृक्षलताअरुकेकवाई॥ ३१॥ तेहितूल्यजनजिवतमृतेरू॥ तिनकोधनअ  
सपरलोकमेऊ॥ उपजोगमिकछुआवतनाई॥ असजनकुंउपासतआई॥ सोभिजि  
वतमृततूल्यकहाई॥ कबऊनदिमोगिरेकऊताई॥ ३२॥ असतपुरुषकेसंगसेजबही  
बुधिअवरायेजनकितबही॥ जअवि नग्र तमोगिरेजेसे॥ शिरफुटोपिडापायतेसे॥  
असपरलोकऊमेऊखदाता॥ पाखंडुमारगहेविख्याता॥ ३३॥ परकुंपिडिअन्नपात  
नजबहि॥ सोजनतातभ्रातकितबही॥ तृणापरघस्टेखिलरेतेरू॥ यदितातमाईसंग  
लरेऊ॥ ३४॥ प्रियपदारथघरमेनाई॥ दुखरूपीफलहेजामाई॥ तिनकुंपाईदवऊकिन्हा  
ई॥ गोकअग्निजरिवैराग्यपाई॥ ३५॥ कालेप्रतिकुलपायेजोऊ॥ राजकुलरुपराहससो  
ऊ॥ इनुतेहरिलिनधनरुपप्राणा॥ हास्पविनोदविनशबज्जुराना॥ ३६॥ सोरवा॥ मनोर्थ

प्रवृत्तिमगमेजिवरहेतारं असपरलोकमितुंचनिंचारं जन्मकेरखेतहेजेरु कर्मकु  
कुंबडसाधुकहेरु ४३ ॥ त्रियाधनचोरनगयेजबही ॥ धनिनेपकरिबांधेनुतबही ॥ देव  
जागसेलुंटेरु ॥ त्रियाधनकुंलेगयोतेरु ४४ ॥ तिनसेबलियेजिनेछिनारं ॥ तिनसेअ  
तिबलियेखोंचारं ॥ युसंसारमगकुमेजोऊ ॥ त्रियाधनभोगिशकेनकोऊ ४५ ॥ वंडधु  
पवायुवर्षातारं ॥ अधिदैवअधिभुतअध्यात्माइ ॥ सोडुरवमेदनसमर्थनारं ॥ बडचिंता  
सेखेदहिपारं ४६ ॥ तनिकधनपावेजनजबही ॥ व्याजेहेतपरस्परतबही ॥ विशको  
डिजितनोधनजोऊ ॥ डुसरेकोचोरिलेतकोऊ ४७ ॥ इअकेवंचनकुसेतबही ॥ द्वेषप  
रस्परपावेसबही ॥ प्रवृत्तिमगमेवकुकष्टारं ॥ धनकछुप्राप्तनयेउअरं ४८ ॥ तिनको  
नाशहोवेगिजानी ॥ बाकुविधरुशपातहिप्रानी ॥ फरवडुखरागद्वेषभयजेरु ॥ अ  
भिमानप्रमादशोकतेरु ४९ ॥ मोहमलुरउन्मतपणुलोना ॥ इषाअपमानभुरवतृ

यांरहिताई ॥ असविधपाषंडदेवकहाई ॥ तिनकुंउपासतसबजाई ॥ वेदहितस्वमति  
कल्पितजेह ॥ पाषंडशास्त्रसेपुजितेह ॥ ५७ ॥ आपमतिसेआपठगाया ॥ पाषंडदेवउ  
पामिगया ॥ पाषंडिनेअतिठगेजबही ॥ ब्राह्मणकुंलमेपैवेतबही ॥ ५८ ॥ उपनयनादि  
आचरनताके ॥ श्रुतिरुस्मृतिसंबंधीयाके ॥ कर्महुंसेविष्मकोजोक ॥ आराधनकरनादि  
मोक ॥ ६० ॥ ओरदेवकुंमाननोनाई ॥ असआचरणविप्रकोताई ॥ तामेशूधवर्तनोजेह ॥  
तिनकोअनावजनकुंहेह ॥ ६१ ॥ स्त्रीपुरुषहुंकेसंगमाई ॥ कुदुंबनरणपुषणगमेताई  
॥ अग्निहोत्रसंध्यास्नानाई ॥ यहआचाररुनहिताई ॥ ६२ ॥ बंदरजातिउदरभरजेमें ॥ स्त्री  
पुरुषसंगईछेतेमें ॥ श्रुइकुलमेनिमहितजोक ॥ अतिरुपागबुधिजुतजनकोक ॥ ६३ ॥  
निजईछामेक्रिडाकरही ॥ एकएककिमुखदेखतफरही ॥ ग्राम्यकर्मसेविसरेएह ॥ नि  
जमृत्युकोसमयउतेह ॥ ६४ ॥ मोरठा ॥ हारकृतमेदयाल ॥ बानरइकमिरमतेज्यु ॥ में

जिहिगद्दी ॥ जन्मेतिनकुंलहि संघेही ॥ शोककरतमुजातअपाराग ॥ भयजुतबोजरोव  
तसारा ॥ ७३ ॥ हर्षपावतकबुगद्दी ॥ बंधातनरलोकसार्थतेरू ॥ साधुविनअबलुसंघ  
एहा ॥ पिछेनाहिकिरतदेतेहा ॥ ७४ ॥ भवमगमेवलजातहेसबही ॥ साधुपिछेवलउअ  
बही ॥ नरलोकजासेउपजेहोउ ॥ संसारमगकोपारहिजोऊ ॥ हरिहंयुंबडसंतकहेसोऊ  
सोहरिकुंजनपातनकोऊ ॥ ७५ ॥ साधुहेसोहरिकुंपाया ॥ नरलोकसार्थपातनराया ॥  
याजोकरिह्योगसिखाजाई ॥ नहिअनुसरेअमकारणतारी ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ सागकिनदंड  
लोकको ॥ उपशमस्वभावधिर ॥ निवृत्तिपारायणाचितजस ॥ योगपायेमुनिविर ॥ ७७ ॥ हि  
गजजितनहारेजो ॥ मखकरराजकृषिसब ॥ योगसिखाकुंपातन ॥ रनमेसरिगयेअ  
ब ॥ ७८ ॥ चौपारी ॥ असभूमेरिदेतवनाही ॥ वैरपरस्परजातमराही ॥ कर्महिरुपिवेलि  
कहारी ॥ तिनकुंआशरिजनसमुहारी ॥ ७९ ॥ नरककुसेजोछुटेकबही ॥ संसारमगेअत



८९॥ मृगदेहकुं तजेगी जवही ॥ भरतवंचेस्वरकहततवही ॥ हेयजरुपनमुमेतोई ॥ मखफ  
लप्रदहरितुमकुंसोई ॥ ८९ ॥ धर्माचरणामेनिपुराणाथा ॥ तुमकुंनमनकरुणकसाथा ॥ अ  
ष्टांगप्रवर्तकस्वामी ॥ सांख्यशास्त्रकेवर्तकनमामी ॥ ९० ॥ प्रकृतिकेप्रेरकहोजेहा ॥ नारा  
यणहरिकुंनमुमेहा ॥ सुहरिमेहितजुतमनधारी ॥ भरतनेराज्यादिकविसारी ॥ ९० ॥ हरिन  
रुनेखानकीना ॥ शुधगुणकर्मयुक्तप्रवीना ॥ राजरुषिभरतकिचरितजेरु ॥ कल्याण  
कारिवयप्रदतेरु ॥ ९१ ॥ यज्ञधनस्वर्गमोक्षहिदाता ॥ सोइचरितकुंजनसाहाता ॥ फनेक  
हेअरुबरवानेजोक ॥ निजतेमनोर्यपातसवसोउ ॥ कछुपदाथअोरमेराहा ॥ इच्छतना  
दिकबहुजनतेहा ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ इतिश्रीमतभागवत ॥ पंचमस्कंधमेकु ॥ जडभरतकेचरि  
त्रजो ॥ नूमानंदकहेकु ॥ ९३ ॥ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृत  
भाषायांचतुर्दशोऽध्यायः ॥ ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ भरतचरितकिनअष्टमे ॥ भरतवंशमे

उत्तीयकिदेवकुलान्नियाना ॥ तामेप्रस्तावकतमयेक ॥ प्रस्तावनाशिनियुत्माथेक ॥ ८ ॥ सो  
रवा ॥ तामेविभूजेक ॥ विभुकिनारीरतिनामा ॥ तमसुतपृथषेणोक ॥ तिनकिदाराच्या  
कुंती ॥ १० ॥ तिनसुतनक्तनाम ॥ नक्तकिदाराप्रतिहिजे ॥ तिनसुतगयगुणधाम ॥ राजरू  
षिमेश्रेष्ठप्रति ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ जकरक्षणाकिइच्छाधारी ॥ शुधसत्वमूर्तिमयेसुरारी ॥ सा  
क्षातविष्टुप्रमुकहई ॥ तिनकिकलारुपगयराजार् ॥ आत्मनिष्ठाद्विषक्षणासंरू ॥ महा  
पुरुषपणुपायंतेरू ॥ १२ ॥ प्रजाकुंपालनपोषाणाजोक ॥ प्रसन्नलडावनशिहासोक ॥ इ  
तनेलक्षणाहेयामाई ॥ यज्ञादीककरेमुदपाई ॥ १३ ॥ दोप्रकारकोनिजधमाई ॥ वासुदेवमे  
अर्पहिताई ॥ महापुरुषअरुप्रजकेस्वामी ॥ ब्रह्मअरुभगवानगुणधामी ॥ १४ ॥ प्रभुमे  
अर्पितधर्महिजेरू ॥ परमपुरुषार्थदोततेरू ॥ सोईधर्मब्रह्मवितपदसेवी ॥ सिधमयोम  
क्तियोगभेवी ॥ १५ ॥ तिनसेफिरफिरसंस्कारपाई ॥ अतिशुधमतिभरगयराजार् ॥ तबुमे

पजेता ॥ गयकुंकरप्रपतहेतेता ॥ २३ ॥ पालनरुपधर्मसेजोऊ ॥ दक्षिणादिसेपुज्यासोऊ  
सोच्चास्माराणनिजधर्मफलमेऊ ॥ छुवोनागपरलोकमेतेहू ॥ गयराजाकुंदेवतराहा  
॥ बज्रसोमपानयुक्तकिनेहा ॥ २४ ॥ गयमखमेइंद्रमदपाया ॥ यज्ञमुक्तिवास्तुदेव  
आया ॥ अधाऊसेविशूधजोऊ ॥ अचलभक्तियोगकरिसोऊ ॥ २५ ॥ अर्पणाकिनय  
ज्ञफलजेहू ॥ प्रत्यक्षपाणोप्रभुलेततेहू ॥ भगवानहृत्प्रियावतजबही ॥ अज्ञदेवमनु  
ष्यवेक्षितरासबही ॥ २६ ॥ तृप्तहोतप्राणिसबकोऊ ॥ प्रितिरुपअंतर्यामिसोऊ ॥ तृ  
प्तनयोमेप्रत्यक्षकहहि ॥ प्रगटप्रितिभयेसोलहही ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ गयकिनारिजोऊ  
गयंतिनामहेजेष्ट ॥ तिनसुतजन्मेसोऊ ॥ चित्ररथसुगतिअवरोधन ॥ २८ ॥ चौथाई ॥  
चित्ररथऊकिउरणादारा ॥ तामिसम्राजसुतहिप्यारा ॥ सम्राजदाराउत्कलाई ॥ मरिचि  
सुततामेउपजाई ॥ २९ ॥ मरिचिनेविंडुमनिमाई ॥ विंडुमानसुतदिनेजनाई ॥ विंडुमान

हेजेऊ ॥ भुरूपकमलकिर्णिका ॥ शोलकिअधातेऊ ॥ १ ॥ चोपाडी ॥ परिक्षितकहेशु  
कतुममोई ॥ भुमंडलिविस्तारकत्योई ॥ रविप्रकाशकरतद्विज्यालू ॥ चंद्रताराजुतदर्शि  
तालू ॥ २ ॥ प्रियव्रतरथपश्चिलासेरू ॥ रचायेसातसिंधुकहितेरू ॥ हेशुकजितुमममर्थ  
हेहा ॥ सिंधूसेसातद्विपन्नयेहा ॥ तिनकेनेदकस्यनाजेती ॥ संज्ञेपेदेखास्तुमतेति ॥ ३  
॥ तुमनेमवमोकुंजोकीना ॥ मानलक्षणाजुतकहोप्रविना ॥ शुक्कहेप्रभुहिमायाकेरू  
॥ गुणाहेतिनकोअैश्वर्येरू ॥ ४ ॥ तेदिसंबंधिस्थानकेजोऊ ॥ नामरूपहेअनेतसोऊ ॥ म  
नवचनेकरिकहनजेहा ॥ देववयसेसमर्थनतेहा ॥ ५ ॥ भुगोलकिनामरूपमानजेति  
लक्षणाप्रधानपणोकऊतेती ॥ भूमंडलरूपकमलहेहाई ॥ सप्तद्विपहेकोशकिनाई ॥ ६ ॥  
विचकोकोशजंबुद्विपहेरू ॥ लक्ष्योजनविस्तारीतेरू ॥ कमलपत्रसमगोलआकारा  
॥ नैवखंडतिनमैधारा ॥ ७ ॥ अष्टमर्यादागिरिकहाया ॥ तिनकरिकेनवखंडरचाया ॥ रम्य

नि

क



तेदल्लिनदिशाई निषधदि मकुंठहिमालयाई हरिषर्षकिंपुरुषदोक ॥ तिमरोखंडम  
रतहिसोक ॥ १६ ॥ तिनके मर्यादागिरिजेता ॥ पूर्वपश्चिमसिंधुलगेता ॥ श्लाघनतेपश्चि  
ममाई ॥ माल्यवाननामगिरिकहाई ॥ १७ ॥ पूर्वमेगंधमादनदोक ॥ निलनिषधकुंलगिदें  
सोक ॥ माल्यवानमर्यादागिरि ॥ केतुमालनामेखंडकेरी ॥ १८ ॥ गंधमादनगिरिहेजोक  
॥ भद्राश्वखंडकोदेसोक ॥ मंदरमेरुमंदरकुमुदाई ॥ सूपारश्वगिरिचौथाई ॥ १९ ॥ दोहा ॥ मे  
रुकेचक्रदिशाक्रमे ॥ संभरुपेरचिदिन ॥ दशादशमहस्रहियोजन ॥ उंचरुविस्तारकिन  
॥ २० ॥ चौपाई ॥ पूर्वपश्चिमकेपर्वतदोउ ॥ दक्षिणाउतरलंबेसोक ॥ दक्षिणाउतरकेगिरि  
जेहा ॥ पूर्वपश्चिमलंबेउतेहा ॥ २१ ॥ चक्रपर्वतपरवृद्धादिचारा ॥ आंबजांबकदंबवड  
नारी ॥ गिरिपरशोभेध्वजकिन्याई ॥ उंचेअग्याज्ञतयोजनाई ॥ २२ ॥ तितनेडालिकेविस्त  
रा ॥ ज्ञातयोजनथलसबकारा ॥ चक्रगिरिपरफुदचक्रहेरु ॥ उधमधरशुरममिठजलेरु

रि

इजांबुनदीहा ॥ ३० ॥ अद्युतयोजनशिखरुंचाई ॥ तासे परे परे नुपर अप्पार ॥ ते हि स्थल  
तेद हि गादिशाई ॥ बहत इलाह तखंडमाई ॥ ३१ ॥ सोरगा ॥ जंबुनदिकितटदोउ ॥ ताकि मृ  
तिकारसमिंजे ॥ वायुसूर्यसेसोउ ॥ पङ्कजइजांबुनदशोनु ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ देवलोकमि  
आधुषणयाके ॥ निजदागजुतधारतताके ॥ मुकुटकडंरुकटिसेखलाई ॥ देवसबनि  
श्रेधरहिताई ॥ ३३ ॥ सूपारश्वगीरीपरजोक ॥ कदंबवृक्षकेकोतरसोउ ॥ तामेसुनिकसेप  
बधारा ॥ पंचवांनचोरोविस्तारा ॥ ३४ ॥ गिरिशिखरतेगिरकेएहा ॥ पश्चिमइलाह तमेते  
हा ॥ मधधाराकुंसेवनहागा ॥ देवमुखसेध्यासनिसारा ॥ शतशतयोजनपर्यंतार ॥ सं  
गंधिचक्रुओरसूहाई ॥ ३५ ॥ कुंमुदपरशतबटशोनामा ॥ बटकिबड्डालिप्रदकामा ॥  
तिनमेसंगिरेडुधदधिधीता ॥ मधगुडअन्नपटसज्याहिता ॥ ३६ ॥ आसननूषणान्ना  
दिकजोक ॥ सबनदवांछितपुर्णहिसोक ॥ शिखरतेगिरेउतरदिशाई ॥ इलाह तखंडमे

बिच भागमेजेहा ॥ ब्रह्माकिमनोवतिपुरितेहा ॥ दशहजारयोजनविस्तारा ॥ कंच  
नकिचक्रकुंणिनिधारा ॥ ४५ ॥ अजपूरिचक्रकेचक्रओरा ॥ इंद्रालोकपालअष्टोरा  
॥ निजनिजवणिपुरियुंतेहां ॥ अटिअटिसहस्रयोजनराहा ॥ ४६ ॥ पूर्वमेइंद्रकुकिधा  
मा ॥ अमरावतिपूरिहेनामा ॥ अपिकोणामेअग्निकेहा ॥ तेजोवतिपूरिजोतेहा ॥ ४७ ॥  
दक्षिनमेसंयमनिनामा ॥ यमराजाकीपूरिदिधामा ॥ नैरतकोणामेनिकृतकेरी ॥ क  
हमांगनानामपुरीहेरी ॥ ४८ ॥ पश्चिमकुमेवरुणाकीजेहा ॥ अधावतिपूरीहेतेहा ॥ वायु  
कोणामेवायुकेरु ॥ गंधवतिपुरिनामहेतेहा ॥ ४९ ॥ उत्तरमेकूबेरकीजोऊ ॥ महोदया  
नामपुरिसोऊ ॥ इज्ञानकोणोरुद्रकेरा ॥ यशोवतिपूरिहेते रा ॥ ५० ॥ दोहा ॥ इतिश्री  
मत्तप्रागवत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ नूवनकोशाकोवर्णन ॥ नूमानंदकहेऊं ॥ ५१ ॥ ॥ इ  
तिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनूमानंदमुनिकृतभाषायांत्रोऽत्रोऽष्टोऽध्यायः ॥ १६ ॥

ननु तं दामे धारी ॥ गंगा कुं अब्रलु र हे वारी ॥ ८ ॥ दिगन्त्रा ई प्रगत मुक्ति जै से ॥ मुमुक्षु मा  
 ननु त धर ही तै से ॥ तप कि आसं ति सि धि हे गती ॥ सप्त रुषि को अनि प्राय ते ती ॥ ९ ॥ सो  
 र्गा ॥ सब जिव के अंतर ॥ जामि वासु दे व विषे ॥ भक्तियोग निरंतर ॥ सोला न से सब त  
 जि दिन ॥ १० ॥ चौ पाई ॥ और पूरुषार्थ हे जेता ॥ आत्म ज्ञान सहित सब तेता ॥ सप्त रु  
 षि कु ने सबी राहा ॥ उपेक्षा करि दी ने उते हा ॥ ११ ॥ वां ॥ सुगंगा उत रे ज बही ॥ अनंत को टी  
 विमान ननु त त बही ॥ ता से व्याप्त न भ मग माई ॥ उतरि शशि मंडल निज वाई ॥ १२ ॥ पुनि  
 मेरु पर्वत पर राहा ॥ अज कि पूरि कु मे आइ ते हा ॥ ब्रह्मा स्थल मे न इ च कु धारा ॥ सि  
 ताल क नंदा चक्षु भ झारा ॥ १३ ॥ चक्र नाम से चक्र ने द पावा ॥ चक्र दि शान दि पति सि  
 लावा ॥ सिता ब्रह्म सदन ते धाई ॥ केशरा चल के शि रवर ताई ॥ १४ ॥ गिर के निचे चले  
 उते हा ॥ गंध मादन शि रपर गि रे हा ॥ भद्रा श्व खंड बिच लाई ॥ पूर्व दिश मि लिखार मि



नहिरारू॥ नयेकर्मशुभप्रशुभजेरू॥ शुमिस्वर्गमेहीतनतेरू॥ भरतरवंडकेशुभरू  
महेरू॥ तिनकोसरुवरूपफलजोजोरू॥ अष्टखंडमेभोगेसोरू॥ ३३॥ तामेरहेपुरुष  
जोताको॥ त्रेतायुगसमकालहियाको॥ दशहजारवर्षवयहिजाके॥ दशहजारगज  
कोबलताके॥ ३४॥ बज्रतुल्यकठिनतनुमार॥ बलवयहर्षसेअतिहर्षई॥ महासंभोग  
जुतनरनारी॥ शतवर्षरहेअंतरवयकारि॥ ३५॥ तवराकगर्भकुंधरिजेहा॥ अंसिदे  
सबदारातेहा॥ सबदेवपतिइंद्रादिजोरू॥ बड़ेमेवकनेपुजेसोरू॥ ३६॥ स्वच्छंदपणो  
हिकरेविहारा॥ वनमेजाइदेवजुत हारा॥ सबरुतुमेफलफुलपलबाई॥ तिनकेभ  
रसेजालिनमाई॥ ३७॥ बेलिहृक्षवनमेसुहाई॥ सुंदरस्थानकहिजासाई॥ गिरिगुहामे  
करेविहारा॥ फुलेकमलकिसंगंधअपारा॥ ३८॥ सोगंधसेअतिहर्षया॥ राजहं  
सकलहंसकहाया॥ कारंडवजलकुंकुटजेरू॥ चक्रवाकसारसपक्षितेरू॥ ३९॥ ब

४६॥ महापुंसवगुणाकुंजेहा ॥ प्रकाशकतुमद्देहाकतेहा ॥ अपारमहिमाहेतवसा  
 मि ॥ ग्रहमंत्रकदिनमोनमामी ॥ ४७ ॥ जज्ञनकरनजोग्यप्रभुतेग ॥ चरनकमलसोश  
 रनहमेरा ॥ सबप्रैश्वर्यषटगुणाजोऊ ॥ तिनकेआश्रयहोतुमसोऊ ॥ ४८ ॥ निजभक्त  
 मेप्रगटकनेरू ॥ सबजनरक्षकस्वरूपतेऊ ॥ मृसुजन्ममदननिजजनके ॥ अभक्त  
 कुंप्रेरततुमतनके ॥ सबनियंताहोतुमस्वामी ॥ युंजानीप्रजुतोयनमामी ॥ ४९ ॥ दो  
 हा ॥ रखनविश्वकुंनियममे ॥ देखतहोमगवान ॥ तवहृगकुंलेपेनही ॥ विशयइंड़ीयु  
 आन ॥ ५० ॥ क्रोधवंगनहिजितेहमे ॥ हमारहृष्टिजेरू ॥ विषयइंड़ियुंलेषहि ॥ सुतव  
 लेपेनतेऊ ॥ ५१ ॥ निजइंड़ितनईछत ॥ मुमुक्षुजनजोकोउ ॥ कपुतुमकुंजानेनही ॥  
 असजानतहेतोऊ ॥ ५२ ॥ चोपाई ॥ असतदेहमिअभिमानधारी ॥ तिनकुंजनात  
 हिमतभयकारी ॥ करामद्यपानकरकिन्याई ॥ अतिजालरहगजनातताई ॥ ५३ ॥ तवप

हिजानेराया ॥६०॥ मायातरनको उपायजोउ ॥ यथार्थकुयजानेजनसोऊ ॥ जगकरहरपा  
लकहेतवदेहू ॥ असविधतुमहोनमुमेतेहू ॥६१॥ दोहा ॥ इतिश्रीमत्तनागवत पंचम  
संध्यमेऊ ॥ संकर्षणकोसोत्रजो ॥ भूमानंदकहेऊ ॥६२॥ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वा  
मि शिष्यभूमानंदमुनिद्वतभाषायांमसदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ मेरु  
किपूर्वखंडुलहि ॥ उतरकेतिनजेहू ॥ सेवसेवककोवर्नन ॥ अठारअध्यामेऊ ॥१॥ चो  
पाई ॥ शुक्कदिनज्ञाश्वखंडुमाई ॥ प्रजापतिधर्मकोसुतकहाई ॥ भइश्रवानामहोकरू ॥  
तिनकेसेवकनरसबतेहू ॥२॥ वासुदेवकिमुरतिहयग्रिवा ॥ धर्मरुपप्रियदेप्रदसीवा  
॥ तिनकुंसमाधिसेदिगधारी ॥ करतवपासनमंत्रउचारी ॥३॥ नइश्रवासेवकजुतहोई  
॥ कहतहयग्रिवकुंसोई ॥ घटगुणश्रैश्वर्यसंपनाई ॥ असविधहयग्रिवनमुमेताई ॥४॥  
धर्मरुपतुममुमुहनुकेरा ॥ अंतःकरणसिधकरहिदेरा ॥ जगवानऊकिचेष्टाजेहा ॥ अति

जकुंदिनपुनिरारु ॥ सप्तसंकल्पतुमहोस्वामी ॥ श्रेयैतुमकुंनमोनमामी ॥ १३ ॥ शुककदि  
हरिवर्षखंडमेरु ॥ नृसिंहरूपेप्रभूरहेरु ॥ प्रजादकेकजनृसिंहजाता ॥ सप्तमकंधमिहेसो  
वाता ॥ १४ ॥ अतिबलननृसिंहरु पकेरी ॥ हरिवर्षखंडकेनरदेरी ॥ अनमभक्तियोगसे  
जोक ॥ फललियेप्रजादसेबिसोउ ॥ १५ ॥ वासुदेवकेगुणकोजेरु ॥ पात्रतोपजादहेतेरु ॥  
दैत्यदानवकुलकुंकुंजोक ॥ निरथरुपकरदीनेसोक ॥ १६ ॥ प्रजादकहेसमर्थतोई ॥ नृसिंह  
नसुमेतवशिष्यहोई ॥ तेजस्विसूर्यादिकजोक ॥ तिनके प्रकारकतुमहिमोक ॥ १७ ॥ प्रग  
तोप्रगतोवज्रनरवाई ॥ वज्रदंष्ट्रकर्मवासनाई ॥ बालोबालोककुंतुमताई ॥ गिलोगिलोमम  
अज्ञाबन्नाई ॥ १८ ॥ अतिनिरनयहमहोवेजेसे ॥ ममउरनिवासकरिरोतेसे ॥ उँखाहाउँझै  
असभाती ॥ मंत्रउचारणकरिदिनगती ॥ १९ ॥ असविश्वकोकल्यानहोरु ॥ खलनरखल  
परागुत्पागोसोक ॥ सबजनबुद्धिसेपरस्परई ॥ राकराककिसुनइछकुचाई ॥ २० ॥ दोहा ॥



मेवङ्गुणाजेहा ॥ वैराग्यादिकं प्रातनतेहा ॥ २८ ॥ मक्तपिशहरहरिमाहाता ॥ देहधरके जि  
वनरुपरख्याता ॥ मल्लकुं जिवनजलहेजेसे ॥ असविधनगवतकुं नजितेसे ॥ २९ ॥ घरमे  
शाकरहेहि नवही ॥ अतिबडोकावेजोतवही ॥ अवस्थासेमोटपयाकी ॥ जानेकरि  
केनहिहेताकी ॥ त्रियापुरुषमेवधकीजेसे ॥ मोटपहेस्युतिनकीतेसे ॥ ३० ॥ मोरठा ॥ य  
हकारनघरत्यग ॥ निर्भयनृसिंहकेचरन ॥ तिनकुं नजनुतरग ॥ युंजनकुं प्रकृादकदि  
॥ ३१ ॥ चोपाई ॥ तृहमात्राशक्तिइखमाना ॥ भयसृहाकोधदिनपगाना ॥ आधित्याधि  
कोकारणगेडु ॥ जन्मतरणकोकारनतेह ॥ ३२ ॥ शुक्रकहिकेतुमालखंडमेडु ॥ रहेप्रभु  
कामदेवरुपेह ॥ प्रियकरनेलक्ष्मिजिकेरा ॥ संवत्सरप्रजापतिकिदेरा ॥ दिनअभिमा  
निदेवसुतजेता ॥ रतिअभिमानिदेवितेता ॥ ३३ ॥ केतुमालखंडकेपतिह ॥ शानव  
र्षदिनरतिजेतेह ॥ बोतेसहजारदोनुराहा ॥ सुदर्शनचक्रतेजसेतेहा ॥ ३४ ॥ उडेगमननु

शक्तिमोक ॥ इतनेकिकारनतुमस्वामी ॥ मनोहरसुर्नितोयनमामी ॥ ४२ ॥ हेप्रभुजगमेप्रि  
याजेहा ॥ वतकरितोयआराधितेहा ॥ इंडिनियंतासिधतुमताई ॥ ओरपतिकुंजावतआ  
ई ॥ ४३ ॥ सोपतिक ॥ तधनआयुषकेरु ॥ रक्षाकरनसमर्थनतेरु ॥ तुमविनपरतंत्रपति  
सबही ॥ ओरकिरक्षाकपुकरेतबही ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ आपनिर्नयअरुओरहि ॥ भयातुर  
जनकोउ ॥ तिनकिरक्षामबवीध ॥ करनसमृथपतिमोक ॥ ४५ ॥ ओसेपतितुमएकहो ॥ इ  
जोनाहिजगमाई ॥ निजकरवसेकरियातूम ॥ ओरतेइछतनाइ ॥ ४६ ॥ इजासबपरतंत्र  
हे ॥ करवकपुदेबेसोई ॥ भयपावेराकरकस ॥ ओसेहेसबकोई ॥ ४७ ॥ दोपाई ॥ स्वतंत्रआ  
नंदमुरतितेरा ॥ वरनपुजनइछारखितेरा ॥ ओरफलकुंइछेनजोक ॥ सबकामपावेप्रि  
यामोक ॥ ४८ ॥ तुमविनफजइछिपुजेतोई ॥ तिनकुंदेतजोइछेसोई ॥ सोफलभोगिनाशाहो  
यजबही ॥ इरवपावेप्रियामोतबही ॥ ४९ ॥ तुमकहोगिकामार्थिजोक ॥ लक्षितोयसेवे

त्रात्मारूपतुमहिस्वामी ॥ इंद्रिदेहमनकिशक्तिनमाभी ॥ वेदरूपनादतिहागेहेरू ॥ लोक  
पालतोयनेदेखेऊ ॥ ५८ ॥ जगकेवद्विअंतरगतितोरी ॥ तववेदवाणिऊमेवदोरी ॥ ब्राह्म  
णाआदिनामसेजोऊ ॥ जगकुंनिममेरखोतुमसोऊ ॥ हारुनारिऊकुंनरजैसे ॥ नियम  
मेराखतहेतैसे ॥ ५९ ॥ सोरवा ॥ कहोगितुमममताई ॥ इंद्रादिलोकपालकहि ॥ विश्वर  
क्तनिममाई ॥ मेरेकपायुंकहोजबहि ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ कऊमेउतरसनऊसामि ॥ पर  
उत्कर्षनुकेनहिस्वामी ॥ सोज्वरइंद्रादिककुंहेरू ॥ लोकपालतुमकुंतजितेरू ॥ ६१ ॥ सब  
हिनेलेहोइकेएहा ॥ जतनकरतनिननिनसबतेहा ॥ द्विपगचऊपगथिरचरजेता ॥  
याजगमेदेखातहितेता ॥ ६२ ॥ रक्षाकरतसमर्थकौनाई ॥ तुमबिनडुजोअसजगमाई ॥  
॥ तुमसबकुं वशागरखनहाग ॥ रक्षकत्तारिकहिप्यारा ॥ ६३ ॥ प्रलेकालकेसिधुमाई ॥  
बऊजलतरंगऊसेसुहाई ॥ तिनमेअप्रोपधिवेजिजुतधारी ॥ नुमिऊकुंमोयलिननेउगा

नेयुक्तद्विविधात्तजोक्त ॥ तेद्विरुपतुमकुंकहेसोक्त ॥ नामरुपप्राकारजितनाई ॥ चोविश  
तत्वसंख्याकहाई ॥ ७३ ॥ सोतवद्विराटरुपकिमाई ॥ कपिलादिकनेकल्पेताई ॥ स्वरुपजा  
नतवद्वोद्विजबही ॥ कपिलादिसंख्यातजेतबही ॥ ७३ ॥ सांख्यशास्त्रमिथांततुमदोई ॥ द्वि  
व्यमूर्तिहरिनमुमेतोई ॥ शुककहेउतरकुंरुखंडेरु ॥ यज्ञपुरुषरुपवराहरेरु ॥ ७४ ॥ खंड  
केमनुष्यजुतनुमिजेहा ॥ भक्तियोगमेंसेबततेहा ॥ उपनिषदकुंबोहतएरु ॥ भगवनव  
राहनसामितेरु ॥ ७५ ॥ वेदकुंकेमंत्रसेजोक्त ॥ यथार्थपणेजनातद्विसोक्त ॥ यज्ञक्रतुरुप  
तुमदोराका ॥ बरुमखतीरुअवेवअनेका ॥ ७६ ॥ महापुरुषशुधकर्मतिहारा ॥ त्रेताहापर  
कलियुगारा ॥ तिनयुगमेयज्ञहोतजबही ॥ त्रियुगतुमकुंकहेतबही ॥ ७७ ॥ अंतर्धामि  
गुप्तरहाई ॥ असविधतेरोस्वरुपकहाई ॥ तिनकुंविद्वानपुरुषजेरु ॥ देवनकुंइच्छतहेते  
रु ॥ ७८ ॥ देहइंदिमेदुंदतताई ॥ काष्टकुंसेअग्निकिन्याई ॥ विवेकज्ञानजुतमनजेरु ॥ क



मस्कंधमेङ्ग॥ खंडदेवनेस्तुतिकिये॥ भूमानंदकहेङ्ग॥ ८७॥ ॥ इति श्रीसहजानंदस्वामिशि  
ष्यभूमानंदमुनिकृतभाष्यामांशुष्टोदशोऽध्यायः॥ १६॥ ॥ दोहा॥ किंपुरुषभरत  
खंडमे॥ सेव्यसेवकजेङ्ग॥ श्रेष्ठपणुभरतखंडको॥ उगणिशअध्यामेङ्ग॥ १॥ चौपाई॥  
॥ शुककहेकिंपुरुषखंडार्॥ आदिपुरुषल्लुमनकिनार्॥ सितापतिरामचंद्र जोऊ॥  
तिनकुंसेवेहनुमानोऊ॥ २॥ रामचरनमेधितिजुतहोई॥ भक्तनिरंतरभक्तिकरिसोई॥ खंडज  
नसहितहनुमानाई॥ आर्षिषेणगंधर्वाई॥ ३॥ औरहिगंधर्वसहितगार्॥ परमकल्पानरु  
पकथाई॥ रामचंद्रस्वामिकि जोऊ॥ अतिहेतमेकनेउसोऊ॥ ४॥ आपेंसोत्रगावेउएरु॥  
षट्श्रेष्ठ्यसंपनजेरु॥ उतमकिर्तिअतिश्रेष्ठाई॥ लक्षणास्वभावसुवताई॥ ५॥ चितनिम  
मेरखेसदाई॥ वरततलोककिरितिआई॥ साधुपणाकिसिमारुपजेरु॥ देवमानेब्राह्मणाकुं  
तेरु॥ ६॥ महाराजाधिराजकहाई॥ रामचंद्रमहापुरुषजाई॥ इतनेसबलक्षणाजामाई॥ नम

ततेऊ ॥ १४ ॥ सत्कुलप्रादिकगुणसबजेहा ॥ वनचरवानरमेनहितेहा ॥ असविधमो  
कुंभक्तहिजानी ॥ सखाकरतमोयनिजजनमानि ॥ १५ ॥ याकारनसरअसरकोऊ ॥  
मनुषवानरमेभजेजेऊ ॥ अत्यतजननकोहेजेरू ॥ रामचंद्रवक्रमानततेऊ ॥ १६ ॥ उ  
तमपुरुषमनूष्यतुल्यरुपा ॥ निजजनकिपिडाहरेनूपा ॥ अयोधावासीसबहितार् ॥  
स्वर्गऊमेदीनेपोंचार् ॥ १७ ॥ शुककहेनरतखंडरहाई ॥ नरनारायणानामकहाई ॥ अ  
कलगतिरूपाउरमेलाई ॥ भक्तजनकिअनुग्रहताई ॥ १८ ॥ कल्पपर्यंततपदोकरही ॥  
धर्मज्ञानवैराग्याचरहि ॥ अश्वर्यजुतइंदिनिममाई ॥ निरअहंकारपणायुक्ताई ॥ १९ ॥  
आत्माकिप्राप्तिप्रदजेरू ॥ नरनारायणतपकरेतेऊ ॥ वणाश्रमकेधर्मजुताई ॥ भरत  
खंडकिप्रजाकहाई ॥ २० ॥ प्रजाजूननारदजिजेऊ ॥ सांख्ययोगजुतमहिमासोऊ ॥ व  
रानिकिनपंचरात्रमाई ॥ कहतहिमावणिमनुताई ॥ २१ ॥ परमभक्तिनावसेजेरू ॥ नारद

कापावे ॥ सोऽप्रज्ञानिपुरुषकहावे ॥ २५ ॥ जानिमर्णाकुसेंदरेजबही ॥ तिनकियलके  
वलथमतबही ॥ तुमसेसहजवासनारूपा ॥ हसकुंदेऊयोगरूपनूपा ॥ ३० ॥ मायानेअ  
पिंदेहमाई ॥ अहंममतातजुयोगपारी ॥ तवयोगविनअहंममताई ॥ ओसुपाअ  
सेमिततनारी ॥ ३१ ॥ शुक्कहंभरतखंडमेरू ॥ बऊनदियुअरुपर्वतहेरू ॥ तिनकेनाम  
करूजोऊ ॥ मलयमंगलप्रस्थदोऊ ॥ मैनाकत्रिकुंडरूपनसोऊ ॥ कूटककोलक  
सत्यगिरिजेरू ॥ ३२ ॥ देवगिरिकुषिमुकशिशोलाई ॥ वेकटमहेंदवारिधेराई ॥ विंध्यशु  
क्तिमाननृसुनामा ॥ पारियात्रशोणाचित्रकुरामा ॥ ३३ ॥ गोवर्धनरेवतकुकुनाऊ ॥  
निलगोकामुखइंद्रिकिलाऊ ॥ कामगिरिआदिशास्याविशेरू ॥ शतशतसहस्रसह  
स्रतेह ॥ ३४ ॥ सोरठा ॥ पर्वतकेमुलतेऊ ॥ उत्पन्नयेनदनदियुहि ॥ असंगमदोवतते  
रू ॥ नामसेपवित्रकरतहि ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ सोजलनरतखंडकिमाई ॥ प्रजापतिनिज

तस्वामि ॥४३॥ मनवागिकुं प्रगो चरार्थे ॥ कौकि आधारे न कुं नाई ॥ परमात्मा वासुदेव  
 माई ॥ फलकि इच्छारहित कदाई ॥ अमो भक्तियोगहि जोऊ ॥ मोक्षकुं को लक्षण हे सोउ  
 ॥४४॥ होहा ॥ उंचनि च गतिकि कारण ॥ अविद्या प्रथिजेऊ ॥ निन कुं मे टन भक्तको ॥ प्र  
 संगमोक्षक हेऊ ॥४५॥ चोपाई ॥ सब पुरुषार्थ साधन जोऊ ॥ मनुष्यतनु देवक हहि सोऊ  
 ॥ हरिसेवा कि उपयोग माई ॥ आवे सो नर जन्म कदाई ॥४६॥ भरतखंड मे पाये जवही ॥  
 क्वा सुकृत करे होय गितवही ॥ जो सुकृत से मनुष्य भयेरु ॥ साधन कि न प्रभु प्रसन  
 येऊ ॥४७॥ हरि प्रसन विन मनुष्य पणाई ॥ इकर पुन्य से आवत नाई ॥ भरतखंड मे नृज  
 न्म केरी ॥ हम कुं इच्छा हे अति देरी ॥४८॥ इकर मखत पवृत दान सेऊ ॥ तुलु स्वर्गादि पा  
 इह मेऊ ॥ सो फल से हम कुं कछुं नाई ॥ हरि चरन स्मृति स्वर्गहि गई ॥४९॥ अति इंडि विष  
 य जोग जामे ॥ स्मृति नाश होत हेता मे ॥ कल्प पर्यंत आवरदा जाकी ॥ देव कुं का स्थान क



हरिहविषलेतः ॥ ५८ ॥ पुणिकामप्रभुदेजोऊ ॥ संपतियुकेस्वामीमोऊ ॥ यज्ञकुकेक  
त्तामेते ता ॥ निष्कामिकर्त्तार्थहेतेता ॥ ५९ ॥ प्रभुद्विगजाचतजनजोऊ ॥ तिनकुंतेसोदे  
वतसोऊ ॥ नाशवंतवस्तुदेवतजबदी ॥ पुनिजाचनोरहेउतबदी ॥ ६० ॥ निष्कामभक्तकुं  
चरणजोउ ॥ देतमवश्छापुणामोऊ ॥ हमनेयज्ञकियेजोऊबदी ॥ वेदशास्त्रअप्यास  
किनसवहि ॥ ६१ ॥ अोरपुनकोफलहेजेह ॥ स्वर्गजोगसेअकरोषतेह ॥ तामेभरतरवंड  
केमाई ॥ हरिस्मृतिजुतनमहमपाई ॥ निजकोजनकरेजनकोऊ ॥ तिनकुंकरवदेवेहरि  
सोऊ ॥ ६२ ॥ शुककहेकितनेकविजेहा ॥ जंबुद्विपसेउपद्विपकेहा ॥ सगरकेअश्वमेध  
हिकेरा ॥ घोडाकुंदुंढतजबटेरा ॥ ६३ ॥ चक्रअोरभुकुंखोदतराहा ॥ शावनहजारसुतकुने  
रवेऊ ॥ स्वर्गाप्रस्थचंद्रशुक्लाई ॥ आबर्त्तनरमणाकहिकहाई ॥ ६४ ॥ मंदहरिणपांचजन्य  
जोऊ ॥ सिंहजलकाअष्टहिमोऊ ॥ जंबुद्विपकेखंडसबेरु ॥ बरनिदेखायेहमतेह ॥ ६५

॥६॥ निजदिपकेखंडसमाई खंडनामैसुतसातकराई इधमजिकुवांदिखंडतेरु ॥ आत्म  
योगेविरामपयेरु ॥७॥ खंडकेनामशिवयवसदोऊ ॥ आंतसुनइहेमतिनसोऊ ॥ अ  
मृतअप्रभयखंडदोउगाहा ॥ सातसुतकेनामहेतेहा ॥८॥ सप्तखंडमेप्रवतसाता ॥ सप्त  
नदियुंहेविरायाता ॥ माणिकुटवजुकुटइंइसेना ॥ ज्योतिष्मानदिरापष्टिवेना ॥ कपर्ण  
मेघमालसप्तोउ ॥ खंडकिमयाहागिरिसोऊ ॥९॥ आंगिरसिअरुणानृमगाई ॥ सावि  
त्रिकप्रजाताई ॥ कतेनरामसंनराजेऊ ॥ सप्तमहानदिनामदितेरु ॥१०॥ सोरठा ॥ नदि  
जलमिकरिस्नान ॥ रजतमगुणविनहोइरहि ॥ हंसपतेगउध्वान ॥ सप्तगचोथोवर  
नदि ॥११॥ हजारवर्षजिवंत ॥ देवतुल्यप्रजापदि ॥ सेवतहिजुंसंत ॥ करजकुंवेदतिन  
कुसे ॥१२॥ चोपाडी ॥ स्वर्गहारसपमुर्तिजोऊ ॥ सबकेआत्मारविरुपसोऊ ॥ मंत्रउचार  
णकरतरु ॥ विष्णुकोरुपसरजदितेरु ॥१३॥ तिनकेशरागेहमसबआये ॥ आचरण

मकहाई सातखंडवांदिदिनेताई ॥ स्रगेचनसौ मनसखंडाई ॥ रमणाकरुदेववर्षकहाई  
॥ २२ ॥ पारिजदप्राप्यायनजोक ॥ अविज्ञातरखंडनामसोक ॥ समगिरिनदिमन्नविख्याता  
॥ सरसनातशृंगगिरिनामाता ॥ २२ ॥ वामदेवकुंदकुमुदजेहा ॥ पुष्पवर्षसहस्रस्मृतेहा  
॥ नदियुअनुमतिशिनिवालिगका ॥ सरस्वतिरजतिकुङ्कनहाका ॥ २३ ॥ दोहा ॥ वरनवा  
रकेनामजो ॥ श्रुतधरविर्यधरेऊ ॥ बसंधरईषुधरदिजो ॥ बासणादिककहेऊ ॥ २४ ॥  
समर्थसबकेआत्मादि ॥ वेदरूपचंदजोउ ॥ वेदमंत्रमेयजतसो ॥ चऊवरनमेकोऊ ॥  
२५ ॥ दोहा ॥ निजकिरणामेचंद्रदिजेरु ॥ हृद्यपक्षमेपितृकुंतेरु ॥ अन्नवादिदेवत  
हेसोक ॥ श्रुत्पक्षमेदेवकुंजोउ ॥ हमसबप्रजाऊकेराजा ॥ चंद्रमातुमहोसुभकाजा  
॥ २६ ॥ मृगसिंधुतेबाहिरहेरु ॥ द्विगुणाकुत्रादिपहेतेरु ॥ द्विपतुल्यघृतकोसिंधुजेहा ॥  
चऊआरविटिरहेउतेहा ॥ २७ ॥ कुत्रायुंवेदेवनेकिनिजेरु ॥ तिनमेकुत्रादिपनामजये

अर्पणकरकूमोक्त ॥ ३५ ॥ घृतसिंधुतेवाहिरजेरु ॥ द्विगुणाकौंचद्विपदेतेरु ॥ क्षिरसिंधुमे  
वेष्टितजेदा ॥ कौंचगिरिसेकौंचद्विपेदा ॥ ३६ ॥ नितंबकुंजपर्वतकिजेता ॥ गुह्रआयुधमे  
तुटगइतेता ॥ तदपिक्षिरसीधुसिचेरु ॥ वरुणनेरक्षणाकिनेतेरु ॥ ३७ ॥ कौंचद्विपमेप्रि  
यवतकेरु ॥ घृतप्रष्टकतनृपतिहेरु ॥ सप्तखंडकतनामेनामा ॥ वांदिदिनेसबकुंधा  
मा ॥ ३८ ॥ कल्याणरूपयत्रावंतदिजोउ ॥ अंतर्यामिसबकेसोक्त ॥ भक्तपिराहरवा सुहे  
वकेरु ॥ चरनकुंपायेघृतष्टेरु ॥ ३९ ॥ आममधुरुहसुतकेनामा ॥ मेघपृष्टनाजिष्टसु  
धामा ॥ लोहिताणवनस्पतिजेरु ॥ सप्तनदिगिरिसप्तखंडमेकु ॥ ४० ॥ गिरिशुक्लअरुव  
र्धमानाई ॥ नोजनउपवर्हणनंदाई ॥ नंदनसर्वतोभइजोई ॥ सप्तनदिकेनामककुसोई ॥ ४१  
॥ अभयाअरुअमृतौघाजेदा ॥ आर्यकातिर्यवतिरुपवतिहा ॥ पवित्रवतिशुक्लानदी  
केरु ॥ शुधनिरमलसेवेजेरु ॥ ४२ ॥ पुरुषदेवकरुपन्नइविणा ॥ चक्रवर्णसोखंडमे



तेजः ॥ देवपालमहानसगिरिदेवः ॥ अनयाऽप्रायुर्दान्प्रसराजिता ॥ उभयस्यष्टिपंच  
दीता ॥ ५० ॥ सहस्रस्रुतिनिजधृतिनदितेहा ॥ कृतव्रतरुससव्रतजेहा ॥ दानवतन्प्रनु  
व्रतद्विज्ञोक ॥ चक्रवर्गखंडवासिसौकु ॥ ५१ ॥ प्राणायामकरिके मिटायै ॥ रजोगुणातमो  
गुणाकहाये ॥ वायुरूपमगवानकुंराहा ॥ परमसमाधिसेयजेतेहा ॥ ५२ ॥ वायुप्रवेशक  
रिस्वमाई ॥ प्राणअपाननिजहृतिसेताई ॥ सबप्राणिकुंधारतजेरु ॥ अंतर्गामिर्दश्वरते  
रु ॥ वायुवसजगवरतेसबही ॥ रक्ताकरोहमारितबही ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ दधिमंडसिंधु  
वार ॥ पुष्करद्विपद्विगुणाहे ॥ निजसम ॥ मि उज्जलसार ॥ सिंधुविंदिरेदेवारे ॥ ५४ ॥ दोपा  
ई ॥ बडोकमलराकहिजाभाई ॥ तातेपुष्करद्विपकहाई ॥ अग्निशिखासमनिर्मलजा  
के ॥ कंचनपत्रदजासुंताके ॥ ५५ ॥ बस्याकोमिंदामनारु ॥ कमलपुष्करद्विपसेतेरु ॥ मा  
नसोत्रगिरिराकदेरु ॥ द्विखंडविचकोटन्याइजेरु ॥ ५६ ॥ फरतेफेरेंदेचक्रश्रीरा ॥ दशरुजा

माइपरे गिरिगजा ॥ ६३ ॥ मानसोत्रमेरुविजेरु ॥ उंष्टक्रोडयोजनहितेरु ॥ साटासातला  
 खअधिकार्श ॥ इतनीभूमिडु रकहाई ॥ ६४ ॥ तितनिमित्तजलसिंधुवारण ॥ तामेवसतदेति  
 वअपारा ॥ तिनतेपरकंचनभुमिजेहा ॥ उगनवालिलखअवक्रोडेहा ॥ ६५ ॥ काचतुल्य  
 कंचनभुतेरु ॥ तिनकेपरलोकालोकहेऊ ॥ अर्धपुष्करदिपसहिता ॥ मित्तजलसिंधुसब  
 हिकीता ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ छुनुलखयोजनसोइहे ॥ भूमिकाजेऊकीन ॥ मेरुलोकालोकविच  
 हि ॥ साहाबारकोटिन ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ उगनवालिलखअवक्रोडाई ॥ कंचनभूमेघाणि  
 नाई ॥ लोकअलोकविचपर्वतरहही ॥ तामेदोनुविभागकरही ॥ ६८ ॥ लोकालोकगिरि  
 विचमाई ॥ त्रिलोकिइतनेमेंआई ॥ रविआदिध्रुवंअंतेजेता ॥ ज्योतिकेगणहेसवतेता ॥  
 ६९ ॥ तिनकि किराणुं त्रिलोकजोऊ ॥ ताकुं प्रकाशकरतहिमोऊ ॥ लोकालोकसेवाहिर  
 राऊ ॥ किराणुकोउपोकतनहितेरु ॥ ७० ॥ तितनोवंचोपोलोकहाई ॥ रचनास्थितिकवि

चारदिशाप्रकाशतएह ॥ पचिशक्रोडयोजनमेतेह ॥ १८ ॥ मोरगा ॥ अचेतनअंरमा  
ई ॥ प्रवेशकिनसुर्यजबही ॥ मार्जंडनामताई ॥ कहतहेयाकारतते ॥ १९ ॥ चोपाई ॥ हि  
रण्यमयअंरमेज्जेह ॥ हिरण्यगर्भनामसूर्यतेह ॥ दिशकेविभागसूर्यकरही ॥ भुमि  
नभस्वर्गज्जकेतरही ॥ जोगअरुमोक्षकेस्थानजेह ॥ सबकुंवांरतसूर्यतेह ॥ २० ॥ नर  
करुसप्तपाताजकेह ॥ विभागसूर्यनेकिनेतेह ॥ देवनरपशुसरिसृपज्जोक ॥ पक्षिवे  
लियुअंरजिवसोक ॥ सबकेअत्मासूर्यदिजेहा ॥ अधिष्ठातानेत्रकेतेहा ॥ २१ ॥ दो  
हा ॥ इतिश्रीमत्तत्रागवत ॥ पंचमस्कंधमेज्ज ॥ सिंधुद्विपपरिमाणज्जो ॥ भूमानंदकहेज्ज ॥  
२२ ॥ ॥ इतिश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यभूमानंदमुनिकृतत्रायाश्रांविंशप्रतितमो  
ध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ शिशुमारसंगभमतरवि ॥ द्वादशराशिमाई ॥ लोकनिर्वा  
हकेलियुं ॥ एकविशअध्याश ॥ चोपाई ॥ शुककहेलोकअलोकिभूमी ॥ पंचाश

तोत्रिणरू॥ रतियांतेबडोरहततेरू॥ ९५॥ वृष्टिकधनमकरकुंजमीना॥ दिनघटेरजनिव  
देयुकिना॥ दक्षिणागयनकेनभयेजांलू॥ दिवमकिवृद्धिहोवेतांलू॥ १०॥ उत्तरायनके  
होतनजबही॥ रतियूहधिपावेउतबही॥ सुमंदशिघ्रसमानगतिकीना॥ सूर्यकुके  
रथकीहेतीना॥ ११॥ मानसोत्रपरफिरेचक्रश्रीरि॥ नवक्रोडराकावनलक्षोरी॥ इतने  
योजनवडूकषिकहही॥ मेरुतेपुर्वदिशामेहनही॥ १२॥ मानसोत्रपरइंद्रकिजेहा॥ दे  
वधानिनामपुरितेहा॥ मेरुतेदक्षिणागयमकिधामा॥ संयमनिपूरिकुकेनामा॥ १३॥ सो  
रवा॥ मेरुकिपश्चिममाई॥ निहोचनिपुरिवरुणाकी॥ मेरुतेउतरताई॥ विभावरीनाम  
चंद्रकुकि॥ १४॥ चोपाई॥ दक्षिणामेजनरहतताकुं॥ इंद्रपुरिमेरविनुगतयाकू॥ यम  
पुरमेरविश्रावेजबही॥ पुपोरतिनकुंहोवततबही॥ १५॥ वरुणापुरिमेरविजबश्रा  
ई॥ यमपूरिमेअस्नकहाई॥ चंद्रपुरिमेसूर्यदिश्राये॥ यमपुरिमेअधगतकहाये॥ १



॥ योजनचलहीरोघडिमाई ॥ चक्रपुरिमेफिरेअसन्याई ॥ २४ ॥ रथमेराकचक्रहेताई ॥ व  
डकृषिकहतवर्धनामाई ॥ बारमासअराहेजाके ॥ षट्कृतूहेधाराताके ॥ २५ ॥ त्रिया  
लउनालचोमासजेऊ ॥ तिनकालतिनमेनाभिहेरू ॥ रथकेअक्षकोउत्तरभागा ॥ मे  
रुपर्वतपरकिनेजुतरागा ॥ २६ ॥ दुसरोमानसोत्रपरदेरी ॥ तामेरथकोचक्रप्रोवारी ॥  
फिरतसोईघांणिकिन्याई ॥ मानसोत्रपर्वतपरआई ॥ २७ ॥ सोअक्षमेदुसरोअक्षाई  
तिनकोमुलबाधेऊलाई ॥ प्रथमअक्षडोढकोडाई ॥ साढासातलखयोजनताई ॥ २८ ॥  
चौथेभागेछोटअक्षाई ॥ उगनचालिसलखयोजनाई ॥ साढासाडत्रिहजारहेऊ ॥ अ  
धिकअक्षदुजोहेतेरू ॥ २९ ॥ सोअक्षधुवउपरिताई ॥ बांधेवायुपाशासेताई ॥ सूर्यर  
थकोमांचलंबाई ॥ छत्रिशालहयोजनमाई ॥ ३० ॥ नवलाखयोजनचोडाई ॥ धुंसरुंति  
तनुंहेलेबाई ॥ गायत्रिछंदादिकनामा ॥ सप्तधोराजोरेसुधामा ॥ ३१ ॥ सारथियाकेअ

उनुपरोपरिजोउ ॥ निकबुरोगतिसेकरतहि ॥ वाविशामेहेसोउ ॥ २ ॥ चौपाई ॥ परिस्थि  
तकहेमेरुधुकेरी ॥ प्रदक्षिणाकरिचलतकहेरी ॥ राशिसनसुरवगतितुमेकीना ॥ मे  
रुकुंजयोछोउदीना ॥ २ ॥ हमसेबुजिजातनराहा ॥ समऊपरेसुकहोममतेहा ॥ शुक्रक  
हिकुंजारचक्रपराई ॥ किडिआदिजंतुचजेजाई ॥ ३ ॥ तिनकिगतिभिनचक्रतेहेरु ॥ देवा  
तथलतजेतवेरु ॥ सुराशिनसत्रजुसेजोऊ ॥ जानपरतदेशिशुमारसोउ ॥ ४ ॥ मेरुधु  
वकुंजमनेछोरी ॥ अतिफिरतमेरुकेचक्रओरी ॥ कालचक्रसंगेअतिफिरही ॥ सूर्या  
दिग्रहदुजिगतिकरही ॥ ५ ॥ सूर्यआदिकग्रहहेजेता ॥ राशिनसत्रकुंपावततेता ॥ आ  
दिपुरुषनारायणाजोऊ ॥ वेदकहतरेविकुंप्रनुसोऊ ॥ ६ ॥ कालकेनिमेंकरिकेजेरु ॥  
कर्मशुधिनिमितवेदरुपतेऊ ॥ निजआत्माकुंवारिप्रकारि ॥ वांठिरविनेनामनिधारी ॥  
७ ॥ वसंतआदिषट्कृतुमाई ॥ शितउष्मादिककृतुगुणारी ॥ कर्मभोगअनुसारेजे

गतिरवेहा ॥ १५ ॥ रविमंडलउपरेचंद्राई ॥ एकलखयो जनसो ररहाइ ॥ वारमासेगत्रि  
जोबारा ॥ रविनोगतत्राशिमामिसारा ॥ १६ ॥ रविाकराशिमामेनोगी ॥ चंदसवादेदि  
नमेहोगी ॥ पनरदिवसेनहत्राका ॥ रविनोगत्राशिदिनमेठेका ॥ १७ ॥ शिघ्रगतिकरत  
चंदजेरु ॥ सबजिवकेप्राणाजिवनतेरु ॥ शुक्लपद्ममेपुर्णकलाई ॥ दृष्टमपक्षमिखिणक  
लाताई ॥ १८ ॥ तिनसेदेवअरुपितृकिजेती ॥ दिनरतियाविस्तारेतेती ॥ एकएकनक्षत्र  
कुंएरु ॥ त्रिशात्रिशाशुक्रसंनोगेतेऊ ॥ १९ ॥ शोलकलाजुतचंद्रहिजेरु ॥ पुरुषअरुनग  
वानहेतेरु ॥ अधिष्ठातामनऊकेएहा ॥ अन्नमयअमृतमयपुनितेहा ॥ २० ॥ देव  
अरुपितृमनुष्यभूता ॥ पशुपक्षिसरिसृपवेनियूता ॥ सबकुंतृप्तिकरेजिवावे ॥ याक  
रनसबआत्माकावे ॥ २१ ॥ दोहा ॥ चंद्रउपरिचिलक्षहे ॥ योजनअभितितजूत ॥ अ  
वनाविशतहत्रजो ॥ अश्वनिआदिअहुत ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ईशनेचक्रमेजोरेहा ॥ मेरु

तिप्रभुतेह ॥३१॥ एककराशिक्रमेराह ॥ वर्षवर्षविलंबततेह ॥ व क्रनहिहोवेसो  
जबही ॥ बासराकुंलकुंअनुकुलतबही ॥३२॥ इहस्पतिकेउपरिरहही ॥ द्विलक्षयो  
जनशानैश्वरलहही ॥ एककराशिक्रमेजोउ ॥ त्रिसत्रिसमासविलंबतसोउ ॥३३  
॥ त्रिसवर्षवितजावेजबही ॥ द्वादशराशिभोगततबही ॥ शानैश्वरग्रहद्विसवप्रका  
री ॥ अ खिलजनकुंअशांतिकारी ॥३४॥ शानैश्वरउपरिराकादशही ॥ लक्षयोजन  
सप्तक्रुषिवशही ॥ लोककुंकरवदेवतरह ॥ विस्नुपदप्रदक्षिणादेह ॥३५॥ दोहा ॥  
॥ इतिश्रीमत्तन्नागवत ॥ पंचमस्कंधमेहु ॥ ज्योतिचक्रवर्णनजो ॥ भूमानंदकहेहु ॥ ३६  
॥ ॥ इतिश्रीमद्जानंदस्वामिशिष्यनृमानंदमुनिकृतनापायांशविंशोध्याय ॥  
॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ ध्रुवथानजुतशिअुमारहि ॥ स्वरुपहुसेजोकिन ॥ परमेश्वरकिस्थि  
तिजो ॥ त्रिविशामेकहिदीन ॥ १ ॥ चोपाई ॥ अककहेसप्तक्रुषिउपरिजेहु ॥ तेरलारवयो



गसेक ॥ अनुग्रहितहेसवहितेह ॥ १५ ॥ भूमिकेपरगिरतनराहा ॥ अंतरीक्षमेफिरतदि  
तेहा ॥ ज्योतिचक्रकुंबकुक्रषिजोक ॥ शिशुमारकिरचनासेमोक ॥ वासुदेवभगवानकि  
जेह ॥ योगधारणाकहहितेह ॥ १६ ॥ निचशिरअदिगुचलासमदेहा ॥ शिशुमारचक्रहेमो  
तेहा ॥ तिनकेपुछअग्रधुरहही ॥ अग्रसेनीचभागजोकहही ॥ १७ ॥ तामेकउपप्रजापति  
जोक ॥ अग्निइंधर्मरहेचाक ॥ पुछमुलमेधाताविधाता ॥ कदिमेसमक्रुधिरहेरमाना ॥  
१८ ॥ जमणापडखामेरहेजेह ॥ उतरायणाकेनसत्रतेह ॥ दक्षणायनन ॥ क्षत्रजेता ॥ डा  
वेपरखेरहितेता ॥ १९ ॥ शिशुमारकेद्विपडखामाई ॥ बरोबरअवयवकिसंख्याई ॥ वां  
शामेअजबीथीहेह ॥ आकाशगंगाउदरमेह ॥ २० ॥ पुनर्वसुपुष्पनसत्रदोउ ॥ जमनिडाइ  
कदिपररहिमोक ॥ आशअश्लेषापगउजेह ॥ विल्लेभागपरर हहितेह ॥ २१ ॥ अनिजित  
उतराषाढादोई ॥ डायेजमनिनाकपरमोई ॥ श्रवणपूर्वाषाढाहिनामा ॥ जमनिडाइनयन

वसो ॥ श्रीरतागकहार ॥ सकलरोममिरहतहि ॥ २३ ॥ **चोपाई ॥** सकलदेवमयशिशुमा  
रार्श ॥ विष्णुकोसोऽरूपकहार ॥ बानिनिममेकरिसावधाना ॥ दिनदिनप्रत्येजनसूजा  
ना ॥ २४ ॥ **संध्याकालमेहेरिगाहा ॥** उपासनाकरबोलततेहा ॥ तागगणकेआश्रयजो  
ऊ ॥ कालचक्ररूपदेवपतिसोऊ ॥ २५ ॥ महायुरुपतोयनमोनमामि ॥ ध्यानकरतहम  
तेरोस्वामी ॥ असमंत्रतिनकालउचारी ॥ निजपापकुं देवघजारी ॥ २६ ॥ ग्रहनक्षत्रता  
रामयेरू ॥ सबदेवतामयरुपेतेरू ॥ शिशुमारहरिरूपकुंजोऊ ॥ तिनकाले नमेकोऊ  
॥ तेहिकालमिभयेअयजेतो ॥ तुरतनाशापावतहितेतो ॥ २७ ॥ **दोहा ॥** इतिश्रीमतभाग  
वत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ शिशुमाररचनाबर्नन ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ २८ ॥ ॥ इतिश्रीसह  
जानंदस्वामिशिष्यधृमानंदमुनिरुतभाषायांनयोविंशतितमोऽध्यायः ॥ ॥  
॥ २३ ॥ ॥ **दोहा ॥** रविनिचेराऊआदिकि ॥ स्थितिअनुकर्मकीन ॥ अतलादिविलख

सं

॥ जा० प० ॥  
॥ ६१ ॥

दिनामे श्रेष्ठ्यर्थानन्दजोतामे प्रजाअरुसंपनिऊमेएहा ॥ समृधियुक्तग्रहसब  
तेहा ॥ १६ ॥ फलवादिअोरथानकजेरू ॥ बिलस्वर्गमेविहारहेरू ॥ हेत्यअरुदानवसर्पर  
हही ॥ रूतदाररुद्रमेवकलहही ॥ १७ ॥ दोहा ॥ इतनेजुतग्रहकेपति ॥ तिनकेका  
महिजोउ ॥ इअरमेनहिहनातहि ॥ मायाविनोरिमोऊ ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ बिलस्वर्गमेपुरि  
स्चेरू ॥ मायाविमयदानवनेरू ॥ बडुविधश्रेष्ठमणिकिमाई ॥ मुख्यमणिसेरचेनुवना  
ई ॥ १९ ॥ गटदरवाजासभाचोतार ॥ चबुतराअप्राश्रमपुरिफहाई ॥ बिलकेशधरदेत्यना  
गाई ॥ तिनकेग्रहमेअतिशोभाई ॥ २० ॥ नागअरुकरऊकेजोउलाई ॥ किरमेनांपारेवा  
ताई ॥ तिनकेभिजोउलाहिजेहा ॥ गेहभुमिमेसोहततेहा ॥ २१ ॥ बिलस्वर्गमेवनहेजोऊ  
॥ देवलोकवनतेअधिकसोउ ॥ वेलिहृक्षमेरहिलपतार ॥ फलफुलयुल्लनवपलवस  
हाई ॥ २२ ॥ तिनसेनमेउसंहरजाली ॥ मनइंदिमुदपावेभाली ॥ चक्रवाकादिकपक्षिके

अ-२६ ॥  
॥ ६२ ॥

रू जोउलांजलमिसोहततेरू ॥ २३ ॥ मिनसमुहवेकेजलमाई ॥ कंपेजलजुतकमलरहा  
ई ॥ कुमुदकुंबलयकज्जारजेहा ॥ लोहितनिलोसलशतपत्रेरू ॥ २४ ॥ असविधकम  
लजातिवनमाई ॥ विहारकरतपक्षिमुदपाई ॥ तिनकेशब्दादिकसेएहा ॥ इंडिउछव  
टसोहेतेहा ॥ २५ ॥ सूर्यादिबिलस्वर्गमेनाई ॥ दिनरजतिरुपकालभयतार ॥ बडसर्पमे  
अष्टहेजेरू ॥ तिनकेशिरपरमणियुतेरू ॥ अंधकारकुंमेतताहा ॥ असेबि लस्वर्गमे  
वतेहा ॥ २६ ॥ दिअअप्रोप्रधिरसरमायनाई ॥ अन्नपानस्नानादितार ॥ तिनसेअप्राधिया  
पिनहोई ॥ वलिपलिदेहविवरणासोई ॥ २७ ॥ सोरवा ॥ डुगंधपरसेवाई ॥ अमअरुज्ञानि  
जेरू ॥ इतनेहोतनतार ॥ बीजस्वर्गऊमेसबीकू ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ मंगलरुपकीमृसुजोऊ  
॥ रूदरशनचक्रविननहिसोऊ ॥ चक्रप्रवेशतेबिलमिज्जवही ॥ अमुरत्रियाकेगर्भतव  
ही ॥ २९ ॥ भय सेसुवतचक्रमासकेरू ॥ पंचषटमासकेगिरततेऊ ॥ सातलोककीजेले



॥ भा० पं०  
॥ ६२ ॥

एह बरनन करि देखायेजेह ॥ ३० ॥ अतल लोकमे मयकत जोऊ ॥ बलनाम अमुर ॥ अ० २४ ॥  
रहिसोऊ ॥ छनु प्रकार किमायाजेहा ॥ बलनेसर तिहेहूतेहा ॥ ३१ ॥ कितनिमाया  
अमलोकमाई ॥ कितनेमायाविधारततार ॥ बगासरवातवलकेमुखसेहू ॥ त्रियाके  
तिनगाणउपजेहू ॥ ३२ ॥ निजजातिकेपुरुषमेजेहा ॥ आशकरहेखैरगितेहा ॥ निज  
अमजातिकेनरमाई ॥ कामिनिसोशकरहार् ॥ अतिचंचलहिसवभावजाई ॥ पुंश्चलि  
नारिकहतहितार ॥ ३३ ॥ बिलमेतिन प्रकारकिनारी ॥ प्रवेशकरनरकोयहवारिहा  
टकरसमेसाधिगहा ॥ संयोगलियुसमृथकरितेहा ॥ ३४ ॥ हिसबोलिपुरुषकुंहाहू ॥  
निजईछामेरमातंतहू ॥ सोरससेवेपुरुषजबही ॥ दशहजारबरागजवततबही ॥ ३  
५ ॥ मिथअरुइअरहेहमअसे ॥ मदअंधज्युअनिमानकरितेसे ॥ बोलतनिजआ  
त्माकुंहाहू ॥ बखानकरतनिरंतरतेहू ॥ ३६ ॥ वितलमेदाटकेअरनामा ॥ समर्थशिवन ॥ ६२ ॥

वानिजुतवामा ॥ निजपारशदनुतगाणवृतजोउ ॥ ब्रह्माकेसर्गहृदिलियुंसोउ ॥ ३७ ॥ दो  
हा ॥ शिवभवानिकेविर्यकी ॥ अछनदिवलिजेहू ॥ हाटकिनामदिजाहिकी ॥ प्रवर्तिहेसो  
तेहू ॥ ३८ ॥ चोपाई ॥ सोविर्यपिवतअग्निजोऊ ॥ चित्रनानुजलतवायुसेसोऊ ॥ अग्नि  
धुंकतविर्यकुंजबही ॥ हाटकसवर्णाहोवततबही ॥ बडेअसरदागजुतजेहू ॥ अंतः  
पुरमेनुषनधरेहू ॥ ३९ ॥ वितलनिचेसूतलमेरहहि ॥ बरयशपवित्रकिर्तिलहही ॥ वि  
रोचनकोसूतबलिनामा ॥ अबलुरहेउकरिकेधामा ॥ ४० ॥ अदितितेवामनरुपहोई ॥  
इंद्रकोप्रियकरनकुंसोई ॥ तिनलोकजसलिनेछिनार ॥ सुतललोकदितरहेउजार ॥ ४१ ॥  
इंद्रादिककुंसमृथिनार ॥ राज्यलक्ष्मिअसविधरेतार ॥ वामनकुंआराधनगहू ॥ स्वयं  
करिनिर्जयतेहू ॥ ४२ ॥ बलिकुंसुतलमिअैअर्थजोउ ॥ समृधिकेप्रातिनयेउसोउ ॥ वा  
मनकुंभुदिनबलिजेहा ॥ तिनकोफलनहिकावेतेहा ॥ ४३ ॥ सबजिवसमुहकेजिवन



॥ जा० पं०  
॥ ६३ ॥

रूपा ॥ परमात्मा आधारे अन्या ॥ अतिमधुसवके नियंताई ॥ आत्मा रामदांनपावताई ॥  
॥ ४४ ॥ निजदिग प्राप्तिनये उन्प्राई ॥ वासुदेव भगवान् हिताई ॥ अथा आदरनु तमनये रा  
रू ॥ भुदान दिन हरिकुंतेरू ॥ ४५ ॥ मोक्षद्वाररूपमाज्ञाताई ॥ भुमिको सोई दानकद्वार ॥ सुत  
दराज्य बलिपाये जोऊ ॥ भुमिदानको नदिफल सोऊ ॥ ४६ ॥ सोरता ॥ हरिनाम राकवार ॥  
गिरत खरत छिक तलदहि ॥ कर्मदिवंधनभार ॥ अमविनटा रिदेत सबे ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ क  
र्मबंधन किनिवृत्तिकाजा ॥ योगशोरव्यादिसाधनसाजा ॥ तिनकुंकरत मुमुक्षुजेरा ॥ क  
र्मकटेतवनामे नरेहा ॥ ४८ ॥ मिजजनकुं निज आत्मादाता ॥ जानिकुं त्रिवंतवलभजाता ॥  
अमप्रभु कुं बुदिन नृपजेरू ॥ फतलराज्यफल तिनको नतेऊ ॥ ४९ ॥ फतलराज्य दिन ब  
लिकुं जोऊ ॥ अत्युग्रहनदि किन प्रभुसोऊ ॥ प्रभुकि स्मृतिज्ञान चोरराऊ ॥ राज्यभोग अशु  
यंदि तेरू ॥ ५० ॥ ओखपायनपावेजबही ॥ हरिनेयां चाछलकिनतबही ॥ तनुविनचितो ॥ ६३ ॥

किहरिलीना ॥ वरुणपात्रसेवांधेदीना ॥ ५१ ॥ गिरिगुफामेडारे उजबही ॥ अमविधवच  
बोलत बलितबही ॥ विवेकि इंद्रहेतो भिणरू ॥ पुरुषार्थमे चतुरनतेरू ॥ ५२ ॥ मनशुबोक  
रनेकुं काजा ॥ बृहस्पतिकुंटेरे उराजा ॥ तोमि इंद्रनाही सयाना ॥ सोतजीऊ पेइ नगवांना ॥  
५३ ॥ उर्वेइ द्वारे ममदिगाररू ॥ निजत्रिलोकिसांगततेरू ॥ तिनको दासपणुं हिजोऊ ता  
कुं नाहि सांगेऊ सोऊ ॥ ५४ ॥ बऊवयवंतकादुहिजेहा ॥ मनवंतरसंकरिकेतेहा ॥ नाश  
पातत्रिलोकितेरू ॥ तिनकुं जावे प्रभुतजितेरू ॥ ५५ ॥ समपितामह प्रऊादजोऊ ॥ दासप  
णाकुं सांगतसोऊ ॥ हिरण्यकशिपु मरगये जबही ॥ प्रभुदेनलगेराज्यतबही ॥ निर्मय  
अरुनिजपिताको जोउ ॥ प्रभुते अमज्ञानिनिवनसोव ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ रागादिकदिकपा  
यनुत ॥ हरिअनुग्रहविनाई ॥ हसजेसे पुरुषहेजो ॥ प्रजादमगनजा ॥ ५७ ॥ चोपाई ॥ अ  
सविधवचबोलत बलिराया ॥ तिनकि चरित अमकंधगाया ॥ जगगुरुजनपरदया

॥ भा० पं० ॥ रत्नाई वामन जिगदाकर मे शार् ॥ ५६ ॥ बलिके द्वारे रें रहे उरु ॥ तेहिय लप्राये राव ॥ अ० २४ ॥  
 ॥ ६४ ॥ गातेरु ॥ मारे उपग अंगुवातार ॥ लख योजन डर देत बदाई ॥ ५७ ॥ सुत्त निचे तलात  
 लमाई ॥ मयनामदान वरं डर हाई ॥ तिनके तिनपुर शिवने जारी ॥ त्रिलोक सुख करि  
 भये त्रिपुरारि ॥ ६० ॥ शिवके प्रसादसे पुनि गरु ॥ पायेत लात जथान कतेरु ॥ माया वि  
 को आचार्य गहा ॥ शिवने रक्षा किने उतेहा ॥ याकारन सुदर सन किजोऊ ॥ भयमिद  
 गये उपजुत सोउ ॥ ६१ ॥ तलात लनिचे महातलाई ॥ कडुके सुतता मे रहाई ॥ अनेक फ  
 णा जुत सपसवेरु ॥ क्रोधवशनामे गगाहितेरु ॥ ६२ ॥ कुदकतक्षक कालियजेहा ॥ सु  
 खेगा आदि प्रधानतेहा ॥ बडतनुवंत नाग सब सोई ॥ गरुडसे उडे गजुत मन होई ॥ ६३ ॥  
 सुतदार सुदुदकं दुंबसंगा ॥ विहारन करे भयजुत अंगा ॥ महातलनिचे रसातलमे  
 रु ॥ देवनके शबू सब हेरु ॥ ६४ ॥ पणिनि वातक वच कालेया ॥ हिरापपुरवा मिनामते ॥ ६४ ॥

या ॥ हेस अरु दानव वसेसवेरु ॥ उततिसे महा बलियातेरु ॥ ६५ ॥ सोरवा ॥ सबजो  
 कमे प्रताप ॥ आरुके असविध प्रभु ॥ भक्तपिडाहर आप ॥ तिनको सुदर शान चक्र  
 हि ॥ ६६ ॥ चोरपाई ॥ सो चक्रसे दगाये जोऊ ॥ विर्यमद जिनको सब सोऊ ॥ छुपिर  
 हत हेसर्प किन्याई ॥ से देस रु दानव कदाई ॥ ६७ ॥ इंद्रकिडुतिसरमाना मजोउ ॥ सं  
 ब्ररुपवाणि प्रेरतसेऊ ॥ सोवाणि सुनिके सब गहा ॥ इंद्रकते भय पावततेहा ॥ ६८ ॥  
 रसात ॥ जनिचे पातालाई ॥ बडफणा जुत नागपतिरहाई ॥ अतिक्रीधिवा सुकि सुख्या  
 ई ॥ वां सरु कुलिक महाशंखवाई ॥ ६९ ॥ स्वतधने जयधृत रागाई ॥ शंखचुडकं वल अ  
 श्वतराई ॥ देवदादिनाग सबेहा ॥ पंचदशसप्तसहस्रिरेहा ॥ तिनके फणा परम  
 हा मणि हेरु ॥ कान्तिसे तिमर हरहितेरु ॥ ७० ॥ देहा ॥ इति श्रीमत भोगवत ॥ पंचमस्कं  
 धमेरु ॥ पाताल लोक वरन नही ॥ भूमानंदक हेरु ॥ ७१ ॥ ॥ इति श्री सहजानंद



॥ जा० पं० ॥ ६५ ॥

स्वामिशिष्यभूमानेदशुनिकृतभाषासांचतुर्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ दो ॥ अ० २५ ॥  
हा ॥ पातालनिवेशोषकि ॥ स्थितिकिनेउजोउ ॥ जामेरुइदिहोतहे ॥ पविशअध्या  
सोऊ ॥ १ ॥ चोपाई ॥ शुक्रकहेपातालनिवेशु ॥ त्रिशहजारजोजनहेतेरु ॥ तामसिमु  
जिंवासुदेवकेरि ॥ अनंतजाकोनामरहेरी ॥ २ ॥ नासदपंचरात्रमेजोऊ ॥ निष्ठावंतभक्त  
हेसोऊ ॥ चतुर्बुद्धमेसंकर्षणाकहही ॥ पुरुषअरुमायाऊकुंगहही ॥ ३ ॥ आकर्षणा  
होतदोकिजामे ॥ संकर्षणानामकहहितासे ॥ अहंकाररुकेजोजोऊ ॥ अधिष्ठाता  
पणोकरिसोऊ ॥ हृद्याहृदपकुंएककरेरु ॥ याकारणसंकर्षणतेरु ॥ ४ ॥ अनंतकेशि  
रमहस्त्रमाई ॥ एकशिरधरिनुसरशवयाई ॥ कालेकरिअसविश्वकुंजेऊ ॥ मंहारक  
रनईछततेरु ॥ ५ ॥ क्रोधजुतनमतिबुद्धमाई ॥ संकर्षणरुइनयेताई ॥ एकादशमुर्ति  
हेणहा ॥ तिनतिननेत्रजुतसवतेह ॥ ६ ॥ विशुलकरमेधारिरहेरु ॥ बुहविचरुइरा

॥ ६५ ॥

णनयोतेरु ॥ युगलचरणसंकर्षणकेरु ॥ जालनिर्मलनखमणियुजेरु ॥ ७ ॥ तिनके  
मंडलऊकेमाई ॥ श्रेष्ठभक्तजुतसर्पबडाई ॥ एकातनक्तियोगकरिणरु ॥ नमतहर्ष  
जुतमनमेतेरु ॥ ८ ॥ नखमेदेखतनिजमुखतेहा ॥ कुंउलकांतिजुतगालतेहा ॥ अ  
तिमनोहरनिजअंगाई ॥ देवतशेषऊकेनखमाई ॥ ९ ॥ सोरवा ॥ संकर्षणकेजोउ ॥  
विज्ञानश्चेतशुधनुजहि ॥ रुपाथंजसमसोउ ॥ अगुरुचदनकुंकुमलगि ॥ १० ॥ चोपा  
ई ॥ सोकादवमेनिजअंगाई ॥ लिपतनागकुमारियुताई ॥ मुजकोपर्शकरिकेएहा  
॥ उरमेंहोत्रपायेसवतेहा ॥ ११ ॥ कामअविज्ञसेआतुराई ॥ सुंदरमंददमतमुहपाई  
॥ मनवांछितहिभोगकुंएती ॥ संकर्षणतेरुछततेती ॥ १२ ॥ स्नेहमदहर्षजुतनेनाई  
॥ चंचलतनिकजालहताई ॥ करुणामिनिहृगजुतमुखजोऊ ॥ नागकुमारियुदेव  
तसोऊ ॥ १३ ॥ अनंतगुणकेसागरहेरु ॥ आदिदेवसंकर्षणातेरु ॥ प्रमर्षक्रोधवग

**॥ ना ० पं ० ॥** हरिलीना ॥ लोकमंगलजियुरहेप्रविना ॥ १४ ॥ देवदैत्यनागसिधदिजेता ॥ विद्याधर ॥ अ० १५ ॥  
**॥ ६६ ॥** मुनिगाणाजोतेता ॥ ध्यानकरतहेसबमिलिगह ॥ निरंतरमदयेमुदिततेह ॥ १५ ॥ वि  
कारजुतबिहलहृगजाके ॥ अतिसुंदरबचनामृतताके ॥ तामेनिजपार्षददेवता  
री ॥ सुथपतिकुंदेतहर्षपमाई ॥ १६ ॥ निलवस्त्राककुंडलधारी ॥ सुंदरकरहलकेपर  
शरी ॥ उदारलिलासंकर्षणाई ॥ अंगवतसुरहेसुहाई ॥ १७ ॥ वैजंतिवनमालाशरी ॥  
कंचनकिकक्षारहेधारी ॥ कांतिसंगधनुतनुजमिमाला ॥ तिनमेलपटेभमरविशा  
ला ॥ सुगंधसेसतभमगाह ॥ गावतगितमालामेतेह ॥ १८ ॥ दोहा ॥ ध्यानकरत  
रुमुनतजो ॥ संकर्षणाकुंडोउ ॥ मुमुक्षुकेउरआईके ॥ विवामकरदिसोउ ॥ १९ ॥  
**॥ चौपाई ॥** बज्रकालेक्रमकिवामनाई ॥ तामेअविद्यामयगुथाई ॥ तिनगुणहपह  
दयप्रथितोउ ॥ तत्कालनेदिशरतसोउ ॥ २० ॥ संकर्षणकिअनुभावजेहा ॥ ब्रह्माऊ ॥ ६६ ॥

किसनामेतेहा ॥ नारदजितृवरुजुतजोऊ ॥ वर्णनकरिदेखावतमोऊ ॥ २१ ॥ उत्पतिस्थि  
तिलयकर्ता ॥ प्रकृतिकेतिनगुणजोचरता ॥ संकर्षणाकिहृष्टिमैगह ॥ निजनिजका  
र्यामिममर्थजयेऊ ॥ २२ ॥ संकर्षणाकोरूपहेजोऊ ॥ अचलअनादिगकजोऊ ॥ बज्रवि  
धजगकुंधारिहेह ॥ तिनकोमगनजानेजनेह ॥ २३ ॥ कार्यकारणरूपविश्वजोई ॥ संक  
र्षणामेनाषहिसोई ॥ हमपररूपाकरिकेगह ॥ शुधसत्वरूपहोतहेतेह ॥ २४ ॥ मरुके  
मनवशकरनताई ॥ लिखाकिनेसंकर्षणजाई ॥ तिनकुंशिवतमिंहहिजोऊ ॥ इनकिउ  
दारप्राक्रमसोउ ॥ २५ ॥ महापापीपुरुषजोकोई ॥ औरसेनामस्निकेसोई ॥ अकस्मात  
किर्तनकरेजेऊ ॥ धिराअरुपरिहासिऊमेतेह ॥ २६ ॥ संकर्षणामेयुधहोतजनही ॥  
मुमुक्षुआशरतहेतबही ॥ सहस्रशिरमिणकशिरताई ॥ गिरिनदिधिजुतनुमिरहा  
ई ॥ २७ ॥ अणुजुधरिहेअतिवडाहा ॥ असंखप्राक्रमइनकिहेहा ॥ अनंतचरित्र



॥ ॐ ० पं ० ॥ इनके जेह हज्जार जिनै नरक हिन शकेहु ॥ २० ॥ मोरवा ॥ अनंत बल इनमार्ग बज्जु ॥ अ २५ ॥  
 ॥ ६७ ॥ गामहिमार्दनको द्विभूमिके मुलेस्वार्द लिलामे धारि रहें ॥ २० ॥ चोपार्श्व ॥ शुक्रकदे  
 अमलोकमेकोऊ कामनोग इच्छत जनमोऊ कहिदेवाये गति युजेती ॥ कर्मक  
 रिके पातहेतेती ॥ ३० ॥ प्रवृत्तिलक्षणधर्मही जोऊ ॥ तिनके फलरूपगति सबसोऊ  
 ॥ उत्तममध्यमकनिष्ठाहा ॥ कहिदेवाये सबहमतेहा ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इति श्रीमत्प्र  
 गवत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ संकर्षणको महात्म्यहि ॥ भूमानंदकहेहु ॥ ३२ ॥ इति  
 श्रीसद्गानंदस्वामिशिष्य भूमानंदमुनि कृतज्ञापायां पंचवितितमोऽध्यायः ॥  
 ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ भूमिं चै नरकथानहि ॥ पापिकुं तामार्ग ॥ यमइतदंडदेतेहे ॥ छविश  
 अध्यायता ॥ ३१ ॥ चोपार्श्व ॥ परिश्रितपुच्छतशुकतारि ॥ त्रिविधगति नरकुं होतजारि ॥  
 भोगको विचित्रपाणुहे जोउ ॥ कहिदेवाओरमकुं सोऊ ॥ ३२ ॥ शुक्रकहे कर्मकर्ताके ॥ ६७ ॥

ख

॥ पुरुषकुक्षिपाहे जेह ॥ तिनगुण आत्मकपाणुहे जवही ॥ कर्मगति बज्जु विधेहे  
 ततबही ॥ ३ ॥ सात्विकि अधामे सहेही ॥ सुखइ स्वराजसि अधामेही ॥ तामसि अधा  
 मेही जारि ॥ मुदपाणुं इवपाणुं हितारि ॥ ४ ॥ सुनअधिकता अधाकी हेह ॥ सरवादिनि  
 सुनअधिकतेह ॥ प्रतिशोधलक्षण अधर्म जोउ ॥ तिनकुं करतहे पुरुषकोऊ ॥ ५ ॥  
 तिनकि अधा बज्जु प्रकार ॥ अधर्मकर्मफल बज्जुनि धारा ॥ अविद्यानेरचे कामजो  
 ऊ ॥ तिनके परिणामरूपहे मोऊ ॥ ६ ॥ नरकहजारु प्रवरतेह ॥ तिनकी वर्णानकऊ  
 सबेह ॥ परिश्रितकहे नरकहि जोऊ ॥ भूमिको कोउ देशहे सोऊ ॥ ७ ॥ त्रिलोकतेब  
 हिरहेह ॥ त्रिलोकके मध्यमेहेतेह ॥ सोगाथा तुमकहेहु स्वामी ॥ शुक्रकहे सुनइ  
 नृपगुणधामी ॥ ८ ॥ त्रिलोकविचंद्रक्षिणदिशामार्ग ॥ भूमिं जे जलपरभरकारि ॥ सोदि  
 शामे पितरगणारही ॥ अग्निघातादिनामकहही ॥ निजगोत्रके पुरुषकिरह ॥ सत

॥ मा० पं० ॥  
॥ ६६ ॥

आशिवादेतममाधिसेड् ॥ ७ ॥ दोहा ॥ नरतखंडकृतेयोजन ॥ नवांगुहेदजार जो ॥ अ० २६ ॥  
लपुरकृमेयामपुर ॥ चारसिंधुसेंपार ॥ १० ॥ मानसोत्रमेरुउपरे ॥ यामपुरियुदेदेउ  
शोत्रपुरकृतेपास्तो ॥ निमरियमेपुरिसोऊ ॥ ११ ॥ चोपाई ॥ दक्षिण मेरहेपितरराज्ञा  
॥ धर्मस्यसुतसमर्थसाजा ॥ निजपुरुषजमडुतनेजेता ॥ निजपुरत्वायमृतजिव  
तेता ॥ १२ ॥ जमजिवकोक्रमदोपहिजेता ॥ पापफलकिअनूसारेतेतो ॥ दंडकरन  
निजगणजुतरह ॥ हरिआग्यानउलंघततेह ॥ १३ ॥ एकविशतरकयमपुरिमार ॥  
कि तनेककृविहिदेतगनार ॥ नामरुपलक्षणसेसवही ॥ अनुक्रमेकरिकक्रमे  
अवही ॥ १४ ॥ तामिस्रअंधतामिस्राई ॥ रौरवहिमहागेरवकाई ॥ कुन्निपाककालसूत्र  
जोऊ ॥ अमिषत्रवनशूकरकरवोऊ ॥ १५ ॥ अंधकुपक्रमिभोजननेह ॥ संदेशतमसू  
मिंहितेह ॥ वज्रकंटकशालमलिजेहा ॥ वेतरणिपुयोदविशामनेह ॥ १६ ॥ प्राणरोध ॥ ६६ ॥  
नवांगुहेदजारहेडुरा जोजनदतीयस्कंधमिपुरा सोलनमहेयमकेस्थाना यद्गगाध्याकदीगुरुउष्टरान

नलालाजक्षार ॥ सारमेयोदनअविचिकहारी ॥ अयमपानोच्चारकदमाई ॥ रक्षोगाण  
भोजनगाकार ॥ १७ ॥ शुलप्रोतदंशुकदिजेहा ॥ अवरनिरोधनसुचिसुखेहा ॥ पर्यावरन  
ननामनरकार ॥ अराविशदेजमजातनाई ॥ १८ ॥ मोरवा ॥ परधनअरुप रदाग ॥ प  
रबालकुंहरपुरुष ॥ आरजमडुतअपारा ॥ अतिभयानकपकरतसो ॥ १९ ॥ चोपाई  
॥ कालपात्रसेवांधिवलारी ॥ तामिस्रनरकमिशारेताई ॥ अतिअंधारिअन्नजल  
जेह ॥ देतनदंरताउनकरेह ॥ नयदेखावेयमडुतजोरा ॥ पिरासेमुच्छरिजिवबदोरा ॥  
२० ॥ पतिङ्गकुंठगिकेनरकोई ॥ तिनकिदारदिभोगततोई ॥ अंधतामिस्रमिगिरेतेहा  
॥ जमडुतनेपिजेअतिगहा ॥ २१ ॥ वेदनासेनष्टबुधिताकी ॥ कटमुलवृक्षजुनरगतिता  
की ॥ अंधहृष्टिहोरहेजिवजवहि ॥ अंधतामिस्रनामभइतवहि ॥ २२ ॥ तनुहमहेसुतस  
रहमारो ॥ युमानिजिवशोहकरेधारि ॥ निजतनुअरुनिजकुटंबकेहा ॥ केवलनित-



॥ ३०५ ॥ पीपाणकरजे ॥ २३ ॥ सोतनुकुदुंबतजे लोकमार् ॥ पापकुसेगिरे गौरवताई ॥ असलो ॥ ३०२६ ॥  
 ॥ ६६ ॥ कमेहनेजिवजेता ॥ रुरुनामहोरकेतेता ॥ २४ ॥ सोजमपुरमरिआतदिजवही ॥ स्युति  
 नकुंमारतहेतवही ॥ सर्पसेड्डरअतिरुजोता ॥ गौरवनरकमिरहेअनंत ॥ २५ ॥ स्युं  
 महारौरवनरककदार ॥ केवलतनुपोषकगिरेताई ॥ मांसभक्षकरुरुनामजोऊ ॥  
 मांसलियेमारतहेसोऊ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ दयारहितपुरुषहेजो ॥ पशुपक्षिजिवताई ॥  
 रांधतअतिदारुणसो ॥ राक्षसनेदतजार् ॥ २७ ॥ दोपाई ॥ तिनकुंजमडतपकरिजा  
 ई ॥ कुंप्रिपाकमेडारतताई ॥ तातोतेलनस्योदिनामे ॥ पापिकुंपचवाहेतामे ॥ २८ ॥ वेद  
 विघ्ननिजतातकोजोऊ ॥ जोहकरतअसलोकमेकोऊ ॥ तिनकुं कालसत्रमेडारे ॥  
 दशाहजार्योजनविस्तारे ॥ २९ ॥ बाबावरणिनूमिजामाई ॥ निंचअग्निउंचअकतपा  
 ॥ ३० ॥ श्रवतर्षमेतपेशरीरा ॥ बाहिरप्रितरपावदिपिगा ॥ ३० ॥ पशुकेतनुपरगेमहिजे ॥ ६६ ॥

त

ता ॥ रहतहेवर्षदजारुतेता ॥ कबुसोवतकबुजेतगरु ॥ कबुठादनकबुदोरततेरु  
 ॥ ३१ ॥ आपतविनगिरनरजोऊ ॥ निजवेदमगमेलोकमेकोऊ ॥ पारवेडमगकुंपावे  
 जार् ॥ तिनकुंअसिपत्रवनमाई ॥ ३२ ॥ प्रवेडाकराडजमराजेहा ॥ कोरउकुंसेमारत  
 तेहा ॥ इनउतदौरतवनमेरुऊ ॥ द्विआरधारपत्रकटेतेरु ॥ ३३ ॥ हायमरेसुकरेपो  
 कारा ॥ मुळपावतवारंवार ॥ पगलेपगलेगिरतधाई ॥ पारवेडकोफलपातडुर्बाई  
 ॥ ३४ ॥ नृपअरुनृपकेचाकरजोऊ ॥ अदंउनकुंदरेजोमोऊ ॥ विघ्नकुंशरिरदंरुहिदेवे  
 ॥ अतिपापिनृपचाकरतेवे ॥ ३५ ॥ श्रुकरसुरवनरकमेहोऊ ॥ गिरतहेजमपुरजार्  
 सोऊ ॥ अतिबलियाजमडतमितितार् ॥ पिलतचिचुराजोअस्मार् ॥ ३६ ॥ हायवोय  
 कदिगंवतरोई ॥ कबुमुस्त्रपावतहिमोई ॥ निरदोषजिवकुंरुंधतजवही ॥ पिगामोह  
 पावतसोतवही ॥ स्युनृपनृपकेपुरुषजेरु ॥ मूळामोहपावतहितेरु ॥ ३७ ॥ सोस्वा ॥





॥ ना० पं० ॥  
॥ १०१ ॥

एङ् ॥ निजपापमेअतितपहितेह ॥ विटमुत्पंरुनगवरुधिस्केशा ॥ हारमांसनादिमेद  
वहेशा ॥ अमविधवैतरागिमेतपेरु ॥ पापिनृपअरुप्रधानजेह ॥ ५१ ॥ वेशाकेपतिदेले  
कर्मरुं शौचआचारनिमजमनाई ॥ तजिकेलाजपथुज्युगारु ॥ निजमनधारेवरतेतेह  
॥ ५२ ॥ सोमरिजमपुरजावेजबही ॥ अतिनेदितसिंधुमिगिरेतबहि ॥ विटमुत्पंरुलाज  
छिताई ॥ इतनेसेपुणांसिंधुताई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ खरसमस्वभाववंतहि ॥ ब्राह्मणआदिजेह  
॥ मृगयामारनरूपजो ॥ विहारजाकोतेह ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ शास्त्रकहेआधारिकजोऊ  
॥ तामेजिमृगमारतसोक ॥ तिनकुंनिशाणाकरिजमइताई ॥ बाणकमेविंधतमबधार  
॥ ५५ ॥ लोकमेहंजिपुरुषजेता ॥ पथुहनेदेनयजमितेता ॥ सोमरिवैशममंगिरेतबही  
जमइततिनकुंपिरेअतितबहि ॥ ५६ ॥ ब्राह्मणक्षत्रिवैशपदिजोऊ ॥ वार्गानारिमेविर्यध  
रिमोऊ ॥ सोपापिकुं डारतलार ॥ विर्यनदिमेविर्यजमपाई ॥ ५७ ॥ चौरअरुगामजानन ॥ १०१ ॥

अ० २६ ॥  
॥ १०१ ॥

हारा ॥ गामलुटकअरुविषदेनारा ॥ सार्थलुटकअरुप्रोरजोऊ ॥ नृपअरुनृपकेचाकर  
कोऊ ॥ ५८ ॥ कुकर्मकरनेहारागाहा ॥ मरिजमपुरजावेसबतेहा ॥ तबवज्जतुत्यरादवताई  
॥ सातशेविशकुंकररुपाई ॥ जमइतआतहि वेगंधाई ॥ तत्काखताकुंतोरिगवाई ॥ ५९ ॥ सा  
ख्यमेधनदनेदेनारी ॥ दानमेअमसचोलेआरी ॥ अमैजमपुरजावेजबही ॥ अविचिमा  
ननरकगिरेतबही ॥ ६० ॥ निवेशिरउंचेपगधाके ॥ जमइतपटकेनयप्रदताके ॥ ज्ञानयो  
जनउचपर्वतएह ॥ तिनकेशिरसेफिरफिरतेह ॥ ६१ ॥ सोरवा ॥ नरकअविचिमान ॥ रा  
करमपाधारास्थल ॥ तरंगविन्देजान ॥ जलज्युजासतदेसोई ॥ ६२ ॥ चौपाई ॥ तामेपरेमि  
रिऊमेजबही ॥ तिलतिलसमदुकहोततबुतबही ॥ तोभिभूतूनपावेगहा ॥ पुनिगिरि  
परधरिपटकेतेहा ॥ ६३ ॥ विषअरुविषकिदाराई ॥ करेसरुगपानप्रमादलार ॥ ब्राह्मण  
विनअोरवर्णाकोऊ ॥ व्रतमेजिसुरापिवतजोऊ ॥ ६४ ॥ वैशपक्षविषमाहेजेऊ ॥ सोमवलि

॥ जा० पे० ॥  
॥ १०२ ॥

कुं पि वे जो ते ह ॥ इत ते कुं ज म इ त ले जाई ॥ अति पां पर प ग दे के ताई ॥ अग्नि कु सं शि शुर म  
करि हाहा ॥ सुख कु मे मि च त हे ते हा ॥ ६५ ॥ अपे प्र ध म हे तो भि ते ह ॥ म म म म च्योर व र न दि  
हे के ह ॥ अं से अ भि मान करि के जो उ ॥ जिव तो थ को सु वा तु ल्य सो क ॥ ह ह ॥ ज न म त प वि द्या  
आ चारार् ॥ व णा अ म नु त व र जो ताई ॥ ति न कुं व कू मान दे व त नाई ॥ अं से अ प्र ध म कुं न  
म ले जाई ॥ ६७ ॥ शार क द म मे गिर त रा ह ॥ ति चे शि र वं चे प ग ते ह ॥ ता को अंत क वृ आ त  
नाई ॥ अ म वि ध पि डा नो गे स दाई ॥ ६८ ॥ म नु ष्य कि हि सा करि जे हा ॥ नै वा दि कुं य जे जो ते ह  
॥ म नु ष्य रु प प शु त्रि या र वा वे ॥ अं से न र अ रू न रि क हा वे ॥ ६९ ॥ इ नु ने मा र न र प शु जे ता  
॥ ज म पुर मि रा ह स हो इ ते ता ॥ क र्णा इ नु नि ज ह्य रि म हा ह ॥ का रि रु धि र पि त न र त्रि य  
के हा ॥ ७० ॥ ह र्प न्तु त गा वे अ रू न च ही ॥ न र त्रि या ज्यु ली क मे म च ही ॥ न र कुं वा व न हा रा  
जे से ॥ पै ले न चे रु गा वे ते से ॥ ७१ ॥ दा हा ॥ अ प रा ध र हि त कुं व न मि ॥ अ रू ग म के माई ॥ १०२ ॥

॥ अ० २६ ॥  
॥ १०२ ॥

नि ज रि ग आ ये जिव न जियु ॥ वि श्वा म दे स्वाई ॥ ७२ ॥ शु ल अ रू मु न्ना दि क मे ॥ प्रो वि जि व कुं जे ह  
क्रि उ त मा र म ॥ रा वे हि ॥ अं से पु रु ष ते ह ॥ ७३ ॥ चो पा र् ॥ सो म रि ज म पुर जा वे ज व ही ॥ शु ल  
मे त नु प्रो वे त व ही ॥ भू र व त र ष से अ ति पि डा या ॥ ति खि चं च नु त कं क व क आ या ॥ प शि अ  
ति मा र त हि ज व ही ॥ नि ज हू त पा प सं नारे त व हि ॥ ७४ ॥ अ हि नु ल्य क वि न स्व भा व जाई ॥ अं रो र ति  
व कुं उ र्दे ग प माई ॥ हं द शुक मे गि रे न ते ह ॥ जामे पं च अ रू सा त मुर वे ह ॥ ७५ ॥ अ ति क र र क णा र्  
द शु का र् ॥ कुर पू रू कुं गि ले उ धा र् ॥ स र्प नो उं द र कू कुं जे मे ॥ आ र न जि क गि लि जा वे ते से ॥ ७६ ॥ अं  
धा रा नु त स्वा र कि माई ॥ गु फा कुं क ला दि थान क हा र् ॥ तामे रं ध त नि व कुं जो क ॥ म रि जा वे ज म  
पु र मे सो क ॥ ति न कुं ते से ष्ठा न मि डा र् ॥ वि ष नु त धु म दे त अ ग्नि जा र् ॥ ७७ ॥ अ स लो क मे र  
ह स्थ क हा वे ॥ अ ति थि अ भ्या ग त य रू आ वे ॥ ता प र फि र फि र क्रो थ ला र् ॥ मा नु अ ब दे वे गे त र  
॥ ७८ ॥ पा प रु प ह ग से जो व त रा ह ॥ अं से पु रु ष कुं ज म इ ते ह ॥ र ध कं क व र प शि हो र् ॥ व ज्जे

५



**भा०प०** भिचांचमेसोई अतिबलकरिकेअंखिपुंएहा ॥ तुरतनिकाशिलेतहेतेहा ॥ १८ ॥ धनकेगर्व ॥ अ०२६ ॥  
**१०३** ॥ कुसेअनिमाती ॥ जोवतबेकेरगसेजानी ॥ ममधनचोरिजायगेकोऊ ॥ सवतेसंकाररवतदि  
 सोऊ ॥ १९ ॥ धननाशकिचिंतासेंजाको ॥ सूकिगयेमुखरुदयताको ॥ सुखकुंकबुनपावोएह  
 जसउंधनसंचनतेह ॥ २० ॥ उपजातहधिपमातसोऊ ॥ रक्षाधनकिकरतहजोऊ ॥ सोईपाप  
 संगेउरगह ॥ सुचिमुखनरकमेगिरेतेह ॥ २१ ॥ सोरजा ॥ वितकेसंपहकार ॥ पापिपूरुयकुंजा  
 मे ॥ जमदरजिरूपधार ॥ सबअंगसिवतसुत्रमे ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ असेनरकदिजमपुरमार् ॥ शोथें  
 शोहजारुहजारतार् ॥ सवहिनरकमेअधमीजेता ॥ अनुकमेंगिरिकिनहमतेता ॥ २३ ॥ धर्मक  
 त्तपुरुषहेजोउ ॥ सर्गमेअबुकेमंजानसोऊ ॥ मर्यलोकमेंजन्मविकाजा ॥ पुनिपावनकुंकेजियु  
 राजा ॥ २४ ॥ सुखदुखस्वर्गनरकमिजोगी ॥ अवशेषमेजन्मेपुनिजोगि ॥ निवृत्तिसुखागामारगनेह  
 कपनचरुतउररतकेतेहा ॥ २५ ॥ आख्यानमेहमतुमकुंकिना ॥ तसोरचनाकहेप्रवीना ॥ चौद ॥ १०३ ॥

प्रकारकरिकहेह ॥ नागयगाकोस्थूलरूपगह ॥ २६ ॥ निजमायाकेगुणहेजेह ॥ सत्वादिगुणस्य  
 रूपतेह ॥ सोरुपकुंआदरकरिकोऊ ॥ ननेरुनेमुनावेसोउ ॥ २७ ॥ अथानकिसेअधुबुधिदोरमु  
 स्मरुपकुंजानतसोई ॥ वासुदेवकोरुपअसजेह ॥ उपनिषदप्रतिपादिततेह ॥ २८ ॥ स्थूलसूक्ष्म  
 रूपहरिकेदोऊ ॥ स्थूलरुपमेजिस्योमनजोऊ ॥ धिरेधिरेबुधिसेएह ॥ सूक्ष्मरुपमेधरेमनतेह  
 २९ ॥ बुद्धिपखंडनदिगिरिता ॥ राश ॥ नममिंधुपातालदिशामवा ॥ नरकनक्षत्रलोकसवेह ॥  
 परिहिततुमकुंकिनतेह ॥ ३० ॥ दोहा ॥ सकलजीवकोअध्रपे ॥ स्थूलरुपदेगह ॥ अतिअधु  
 ततगवानको ॥ रचनाजामेहेऊ ॥ ३१ ॥ सवंतअोगाणीघावगा ॥ बदिअष्टमिभृगुचार ॥ पंथकि  
 ननूमानंदने ॥ श्रीनप्रकिमोऊर ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमतजागवत ॥ पंचमस्कंधमेऊ ॥ नरककुंको  
 वार्गानदिजे ॥ भूमानंदकहेऊ ॥ ३३ ॥ ॥ इतिश्रीसहजानेदस्वामिशिष्यभूमानंदसुमिह  
 तभाषायोषरविंशतितमाःध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ लेखकशुक्ततुलसीजदगमनाना ॥

श्रीशरजिवनदास

